अवध भारती 2023-24
सप्तम अंक

अवध भारती

लखनऊ की ऐतिहासिक धरोहर छतर मंजिल है।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

बी–1,एन.ई. ब्लाक, द्वितीय तल, पिकप भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ –226010

हमारी भूमिका

हडको द्वारा विभिन्न आवासीय योजनाओं एवं शहरी इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए ऋण उपलब्ध कराया जाता है | जिन प्रमुख क्षेत्रों के अंतर्गत हडको द्वारा ऋण उपलब्ध कराया जाता है वे निम्नलिखित हैं :-

- भूमि अधिग्रहण एवं विकास
- आवासीय योजना
- पेय जल आपूर्ति
- सड़क एवं बाईपास रोड
- शापिंग काम्प्लेक्स, बस अड्डा एवं ट्रांसपोर्ट नगर आदि
- अर्बन इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे सीवरेज, सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट आदि
- उर्जा की विकास योजनायें

हडको द्वारा लिए गए ऋण की अदायगी 10 से 15 वर्षों में की जा सकती है तथा इसके लिए राज्य सरकार की गारंटी या बैंक गारंटी या संपत्ति बंधक (मार्टगेज), हाइपोथिकेशन इत्यादी की प्रतिभूति दी जा सकती है | हडको का ब्याज दर बहुत ही प्रतिस्पर्धात्मक है जो कि ऋण राशि निर्गत के समय लागू वित्तीय प्रणाली के द्वारा चार्ज किया जाता है | आवेदन शुल्क/ फ्रंट एंड शुल्क तथा दस्तावेजीकरण शुल्क इत्यादि हडको में शून्य है | हडको में कमिटमेंट चार्ज भी शून्य है |

हडको वित्त पोषित आगरा – लखनऊ एक्सप्रेसवे

पत्रिका समिति

प्रधान संपादक	श्री आर. के. श्रीवास्तव क्षेत्रीय प्रमुख (प्र.)
संपादक	श्री संजय कुमार संयुक्त महा प्रबन्धक (परि.)
सह संपादक	श्री अयाज़ उद्दीन सहायक महाप्रबन्धक (परि.) एवं हिन्दी नोडल अधिकारी
सलाहकार	श्री दीपक कुमार वरिष्ठ प्रबन्धक (विधि)
विशिष्ट सहयोग	श्री सुनील कुमार वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)
परिकल्पना एवं साज–सज्जा	श्री राजीव शर्मा, उप महाप्रबन्धक (आई.टी.) श्री सुनील कुमार वर्मा, प्रबन्धक (आई.टी.)
सहयोग	श्रीमती आरती शर्मा, वरिष्ठ प्रबन्धक (सचि.) श्री रवि रंजन चौधरी, प्रबन्धक (वित्त) श्री कान्ती बल्लभ, उप प्रबन्धक (वित्त) एवं समस्त कार्यालय के कर्मयोगी।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ, बी–1, एन.ई.ब्लाक, द्वितीय तल, पिकप भवन,
विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ – 226010 दूरभाष 0522–2720834

अनुक्रमणिका

रचनाकारों के नाम	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
संदेश श्री संजय कुलश्रेष्ठ (अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक)	03	ऋषि एवं कृषि परम्परा का द्योतक है श्रावण मास कान्ती बल्लभ, उप प्रबन्धक (वित्त)	26
संदेश श्री एम. नागराज, निदेशक (कारपोरेट प्लानिंग)	04	हमारी विरासत–भारतीय संस्कृति दिनेश चन्द्र बधानी, ए.एफ.(एस.जी.)	27
संदेश श्री डी. गुहान, निदेशक (वित्त)	05	आँधी क्या तूफान मिले माया कुमारी पत्नी सुनील कुमार वरि. प्रबन्धक (वि)	28
संदेश श्री रत्न प्रकाश, महाप्रबन्धक (वित्त), मुख्यालय	06	भारत में नारी का सम्मान पत्नी श्री सुनील कुमार वर्मा	29
प्रधान संपादक की कलम से श्री आर. के. श्रीवास्तव, क्षेत्रीय प्रमुख (प्र.)	07	साड़ी परिधान प्रज्ञा त्रिवेदी, प्रबन्धन (प्रशिक्षु)	30
संपादक की कलम से श्री संजय कुमार, संयुक्त महाप्रबन्धक (परि.)	08	वृक्ष शाम्भवी वर्मा पुत्री सुनील	31
सह संपादक की कलम से श्री अयाज़ उद्दीन, सहायक महाप्रबन्धक (परि.) एवं हिन्दी नोडल अधिकारी	09	परीक्षा जैनब़ अयाज़ पुत्री–अयाज़ उद्दीन	32
भारतीय दर्शन में कर्म ज्योतिष्य शरीर श्री आर. के. श्रीवास्तव, क्षेत्रीय प्रमुख (प्र.)	10-12	कर से आयकर तक रमा शंकर विश्वकर्मा, प्रबन्धक (प्रशिक्षु)	33
चन्द्रयान –3 श्री संजय कुमार, संयुक्त महाप्रबन्धक (परि.)	13-14	हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ की गतिविधियां	34-37
हिन्दी भाषा के विकास में प्रौधोगिकी का योगदान श्री राजीव शर्मा, उप महाप्रबन्धक (आई.टी.)	15	योग और विज्ञान	38
एकल उपयोग प्लास्टिक–प्रतिबन्ध और जागरूकता श्री संजय कुमार, संयुक्त महाप्रबन्धक (परि.)	16-17	चिकित्सा शिविर का आयोजन	39
होली श्री रत्न प्रकाश, महाप्रबन्धक (वित्त), मुख्यालय	18	53वां स्थापना दिवस	40
राजभाषा अधिनियम 1963 से सम्बन्धित जानकारी श्री सुनील कुमार, वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)	19-21	77वाँ स्वतंत्रता दिवस	41
खाने की थाली श्री रवि रंजन चौधरी, प्रबन्धक (वित्त)	22	विश्व रक्तदान दिवस	42
मानव जीवन में मातृत्व शक्ति श्रीमती आरती शर्मा, वरिष्ठ प्रबन्धक (सचि.)	23	विश्व पर्यावरण दिवस	43
हिन्दी पखवाड़ा श्री अयाज़ उद्दीन, सहायक महाप्रबन्धक (परि.) एवं हिन्दी नोडल अधिकारी	24	हडको खेल दिवस	43
चाटुकारिता श्री दीपक कुमार राय, वरिष्ठ प्रबन्धक (विधि)	25	बिजनेज जनरेशन	44

आवरण पृष्ठ लखनऊ की ऐतिहासिक छतर मंज़िल है।
अन्तिम पृष्ठ लखनऊ का दर्शनीय स्थल और ऐतिहासिक धरोहर इमारत इमामबाड़ा है।

संदेश

प्रयत्न, सफलता के सोपान होते हैं । लक्ष्य की प्राप्ति बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करती है कि इस निमित्त की गई कोशिश कितनी मेहनत से की गई है । कार्यों का उत्तरोत्तर निरूपण न सिर्फ हमें निपुण बनाता हैं, अपितु भावी लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग भी सुगम बना देता है । यह सूचना सुखद है कि लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय अपनी राजभाषा गृह पत्रिका के सप्तम अंक का प्रकाशन कर रहा है । अपनी व्यापारिक गतिविधियों के साथ-साथ राजभाषा लक्ष्यों की प्राप्ति भी हडको परिवार के प्रत्येक सदस्य का सांविधिक दायित्व है और मुझे यह जानकर सुखद अनुभूति हुई है कि हडको के लगभग सभी क्षेत्रीय कार्यालय अपने स्तर पर राजभाषा गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं । अवध भारती के सप्तम अंक प्रकाशन के लिए पत्रिका का सम्पादक मंडल एवं क्षेत्रीय कार्यालय का प्रत्येक कार्मिक बधाई का पात्र है ।

शुभकामनाओं सहित

संजय कुलश्रेष्ठ

संजय कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

मुझे यह जानकर अपार प्रसन्नता हुई कि विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ अपनी गृह पत्रिका **“अवध भारती”** के सप्तम अंक का प्रकाशन कर रहा है। मैं पत्रिका के संपादन मंडल और सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ। हडको क्षेत्रीय कार्यालय की पत्रिका के संपादन में जिन रचनाकारों और परिवार के सदस्यों ने भाग लिया वह सभी बधाई के पात्र हैं। मैं पत्रिका के इस सप्तम अंक की सफलता की कामना करता हूँ।

शुभकामनाएं एवं हार्दिक बधाई।

एम. नागराज
निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ अपनी गृह पत्रिका **"अवध भारती"** के सप्तम अंक का प्रकाशन कर रहा है। गृह पत्रिकाओं के प्रकाशन से एक ओर जहाँ कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा का विकास होता है वहीं दूसरी ओर राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन तथा प्रचार-प्रसार की पृष्ठभूमि को एक महत्वपूर्ण आधार प्राप्त होता है। हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ द्‌वारा हिन्दी कार्यान्वयन तथा प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयास अत्यन्त सराहनीय हैं।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

डी. गुहन
निदेशक (वित्त)

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय अपनी वार्षिक घरेलू पत्रिका का सातवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। मैंने लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय में लगभग 04 वर्षो तक अपनी सेवाएं दी हैं। इसलिए मुझे लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की प्रतिभा और क्षमता का पूरा आंकलन है। लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय में भाषा के प्रति जो सम्मान और हिन्दी में कार्य निष्पादित करने की क्षमता है, उससे मैं भलीभाँति परिचित हूँ। मैने अपने कार्यकाल में भी पत्रिका प्रकाशित करवाने में रूचि ली थी। इसके अतिरिक्त नराकास कार्यालयों की निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन करवाया था। उसी दिशा में पुनः लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय अग्रसर है। कोटिशः बधाई।

इस पत्रिका को तैयार करने में लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के क्षेत्रीय प्रमुख एवं अन्य जिन–जिन कर्मनिष्ठ सहयोगियों ने अपना योगदान दिया है वह सभी बधाई और धन्यवाद के पात्र है।

रत्न प्रकाश
महा प्रबन्धक (वित्त)

प्रधान सम्पादक की कलम से

राजभाषा के प्रचार प्रसार की दृष्टि से लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय से छः अंक प्रकाशित किये जा चुके है, लेकिन मेरे द्वारा क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी) का दायित्व ग्रहण करने के पश्चात यह "अवध भारती" का पहला प्रकाशन है। लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अपने कार्य के प्रति जितना लगाव है उतना ही हिन्दी राजभाषा के प्रति रूझान भी है। इसी प्रयास के परिणत उत्कृष्ट हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन हो पा रहा है। इसके लिए हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ के सभी कर्मयोगी बधाई के पात्र है। हिन्दी पत्रिका प्रकाशन से न सिर्फ राजभाषा का प्रचार प्रसार होता है बल्कि कार्यालय के कर्मयोगियों के अन्दर छुपी साहित्यिक प्रतिभा प्रस्फुटित होती है। इसके साथ ही साथ यह पत्रिका परिवार के अन्य सदस्यों को लिखने और अपने विचार प्रकट करने का एक साहित्यिक मंच उपलब्ध कराती है। आप सभी ऊर्जावान अधिकारियों/कर्मचारियों ने स्वयं और अपने परिवार के सदस्यों का अमूल्य योगदान देकर पत्रिका की सुन्दरता को निखारा है। आप सभी धन्यवाद और बधाई के पात्र है।

अपने सभी सहकर्मियों के अतुलनीय प्रयास को सम्मानित पाठको के अवलोकनार्थ अवध भारती हिन्दी पत्रिका का सातवाँ अंक सौंपते हुए अपार हर्ष हो रहा है। आशा है कि आप सभी जिज्ञासु पाठकों को यह पत्रिका पूर्व की भाँति पसन्द आयेगी। इसे तैयार करने में लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मनिष्ठ सहयोगियों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है जिसे आप सभी पाठको के आशीर्वाद और शुभकामनाओं की अपेक्षा है।

साथियों, आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि अवध भारती पत्रिका के छठे अंक को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) लखनऊ से तृतीय पुरूस्कार प्राप्त हुआ है। जिसके लिए लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय की पूरी टीम बधाई की पात्र है। लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय हिन्दी राजभाषा की दृष्टि से ''क'' क्षेत्र में आता है। इसलिए इस कार्यालय की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। हमें न सिर्फ हिन्दी की उत्कृष्ट पत्रिका का प्रकाशन करना है बल्कि हिन्दी में अधिकाधिक पत्राचार हो, पत्रावलियों में हिन्दी में टिप्पणी लिखी जायें, ऐसा प्रयास करना होगा। मुझे यह देखकर प्रसन्नता होती है कि लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मयोगी साथी अपनी–अपनी क्षमता के अनुसार अधिक से अधिक हिन्दी में अपने कार्यो का निष्पादन कर भी रहे है।

साथियों, इस पत्रिका में हडको कार्यालय के सभी कर्मयोगियों ने और उनके परिवार के सदस्यों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया है। पत्रिका के प्रकाशन में जिन सभी रचनाकारों ने अपनी रचनाएं दी है, या अन्य किसी प्रकार सहयोग दिया है। वह सभी बधाई के पात्र है। मैं अपने सभी सहयोगियों का और उनके परिवार के सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ।

ई–पत्रिका होने के कारण सभी क्षेत्रीय कार्यालयों से और मुख्यालय के सभी गुणी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि इस ई–पत्रिका को जरूर खोलें और रूचि और समय के अनुसार अध्ययन करें। तत्पश्चात् प्रकाशित लेखों और कविताओं पर अपनी बेबाक टिप्पणी से हमें अवश्य अवगत करायें। आपके सुझावों एवं मार्गदर्शन का स्वागत रहेगा।

बहुत–बहुत आभार एवं धन्यवाद।

आर. के. श्रीवास्तव
क्षेत्रीय प्रमुख (प्र.)
हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ

सम्पादक की कलम से

मित्रों! बहुत ही प्रसन्नता की बात आपसे साझा करना चाहता हूँ कि अवध भारती पत्रिका के विगत छः अंक लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय से प्रकाशित हो चुके है। यह लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय का सप्तम अंक आपके हाथों में सौंपने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। पिछले नराकास की बैठक में अपनी अवध भारती पत्रिका को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ था। आशा करता हूँ इस वर्ष अपनी अवध भारती को प्रथम स्थान प्राप्त होगा। यह आत्मविश्वास इसलिए पैदा हुआ है क्यों कि अतीत की त्रुटियों से हमने सीखा है और उसी कार्यरूप की परिणित इस पत्रिका में पूरी की गई है। कार्यालय की पूरी टीम ने रूचि लेकर तत्परता से पत्रिका के प्रकाशन में योगदान दिया है, वह सराहनीय है। कार्यालय के सभी कर्मयोगी और उनके परिवार के जनों को भरपूर सहयोग मिला है, इसलिए पूरी टीम बधाई की पात्र है।

साथियों यह पत्रिका नराकास के सदस्य कार्यालयों के साथ साथ हमारे मुख्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए तथा सभी हिन्दी प्रेमियों के लिए एक मील का पत्थर साबित होगी। पत्रिका में लेख कहानियां, कविताएं और लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय की गतिविधियों के चित्र छापे गये है। आशा करता हूँ पाठको को पसन्द आयेगी।

इस पत्रिका के प्रकाशन में जिन जिन रचनाकारों ने अपनी रचनाएं दी है या अन्य किसी प्रकार का सहयोग किया है वह सभी बधाई के पात्र है।

बहुत बहुत शुभकामनाएं ।

संजय कुमार
संयुक्त महाप्रबन्धक (परि.)

सह–सम्पादक की कलम से

मुझे आपसे यह साझा करते हुए हर्ष हो रहा है कि हमारे छठे अंक को नगर राजभाषा समिति लखनऊ द्वारा उत्कृष्ट पत्रिका की श्रेणी में तृतीय पुरस्कार मिला है। जिसके लिए हमारे सभी सहयोगियों को बहुत–बहुत बधाई। मित्रों आप सबकी रूचि और हिन्दी के प्रति गहन लगाव ने हमें पुनः पत्रिका प्रकाशन का आत्मबल दिया है। आपके हाथों अवध भारती पत्रिका का सातवाँ अंक सौपते हुए मुझे गर्व महसूस हो रहा है। आशा है पूर्व वर्षो की भाँति इस पत्रिका को पसन्द करेंगे।

साथियों, राजभाषा की दृष्टि से लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय ''क'' क्षेत्र में आता है। इसलिए इस कार्यालय की ज़िम्मेदारी और बढ़ जाती है कि हिन्दी में अधिकाधिक पत्राचार हो, पत्रावलियों में हिन्दी में टिप्पणी लिखी जायें। मुझे यह देखकर प्रसन्नता होती है कि लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मयोगी साथी अपनी–अपनी क्षमता के अनुसार अधिक से अधिक हिन्दी में अपने कार्यो का निष्पादन कर रहे है। इसलिए हिन्दी नोडल अधिकारी के नाते मेरा कार्य आसान हो जाता है। जिसके लिए मेरे सभी वरिष्ठ अधिकारी एवं सहयोगी बधाई के पात्र है। मेरा भी हिन्दी के प्रति बहुत रूझान है इसलिए हर सम्भव मैं भी हिन्दी में कार्य करने की कोशिश करता हूँ। जिसका परिणाम यह है कि हम हिन्दी राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को छूने के निकट हैं।

साथियों, इस पत्रिका में हडको कार्यालय के सभी कर्मयोगियों ने और उनके परिवार के सदस्यों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया है। सभी लोगों ने अपनी–अपनी रूचि के अनुसार लेख और कविताएँ प्रकाशन के लिए दी है और पत्रिका प्रकाशन में सभी का अपेक्षित सहयोग मिला है। इसलिए मैं अपने सभी सहयोगियों का और उनके परिवार के सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ।

ई–पत्रिका होने के कारण सभी क्षेत्रीय कार्यालयों से और मुख्यालय के सभी गुणी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि इस ई–पत्रिका को जरूर खोलें और रूचि और समय के अनुसार अध्ययन करें। तत्पश्चात् प्रकाशित लेखों और कविताओं पर अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत करायें। आपके सुझावों एवं मार्गदर्शन का स्वागत रहेगा।

बहुत–बहुत आभार एवं धन्यवाद।

अयाज़ उद्दीन
सहायक महाप्रबन्धक (परि.)
एवं हिन्दी नोडल अधिकारी

भारतीय दर्शन में कर्म–ज्योतिष–शरीर

भारतीय दर्शन के अनुसार कर्म तीन प्रकार के होते हैं :

1. संचित कर्म
2. प्रारब्ध कर्म
3. क्रियमाण कर्म।

संचित कर्म : सनातन धर्म में आत्मा अजर अमर अविनाशी मानी गई अर्थात आत्मा कभी मरती नही, पुर्नजन्म में विश्वास करती है। मानस में गोस्वामी जी ने उत्तर कांड में इसकी चर्चा की है : ईश्वर अंश, जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुख राशी। आत्मा जीव से सम्बन्ध स्थापित करने जिस योनि में रहता है, उस काल में कुछ अच्छे–बुरे कर्म करता है उन सभी कर्मो का लेखा–जोखा अंकित होता रहता है। पुर्नजन्म पश्चात पूर्व जन्मों में किये गये कार्यो का लेखा जोखा लेकर जीव आता है वही उसे संचित कर्म कहते है।

प्रारब्ध कर्मः जब जीव आत्मा पूर्व जन्मों में किये गये कर्म वर्तमान में लेकर आती है तो उसे प्रारब्ध कहा जाता है। अर्थात संचित कर्म का जो भाग हम भोगते है प्रारब्ध कहलाता है। कभी कभी व्यक्ति को लगता है कि वह बहुत परिश्रम करता है लेकिन उनके अनुसार उसे फल नही प्राप्त होता है। तब साधारण भाषा में बोलता है कि मेरा भाग्य खराब है। पूर्व जन्मों के संचित कर्म और वर्तमान का कर्म मिलकर फल प्रदान करते है।

क्रियमाण कर्म : वर्तमान में जो कर्म हो रहा है, वह क्रियमाण है। इसी लिए व्यक्ति को वर्तमान में अच्छे कर्म करते रहना चाहिए। तत्कालिक उस कर्म का लाभ भले ही न दिखे लेकिन दीर्घकालिक उसका लाभ अवश्य दिखाई देगा। इसीलिए हमारे यहां कहा गया है कि नेकी कर दरिया में डाल। अर्थात अच्छे कर्म करते जावो और भूलते जावो। पुर्नजन्म पश्चात यही अच्छे कर्म आपका प्रारब्ध बन कर आयेगा।

शास्त्रों में तीन प्रकार के कर्मो की व्याख्या बताई जाती है। पहला सत, दूसरा रज और तम। इसका उल्लेख श्री मद् भगवत गीता के 14वें अध्याय के 5वें श्लोक में भी किया गया है :

सत्तवं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्।।

हे अर्जुन! सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण ये प्रकृति से उत्पन्न तीनों गुण अविनाशी जीवात्मा को शरीर में बाँधते हैं।

1. स्थूल शरीर
2. सूक्ष्म शरीर
3. करण शरीर।

स्थूल शरीर : जन्म के बाद जो शरीर सामने दिखई देता है, वह स्थूलशरीर होता है, इसी स्थूल शरीर का नाम दिया जाता है, इसी के द्वारा संसारी कार्य किये जाते है, इसी शरीर को संसारी दुखों से गुज़रना पड़ता है और जो भी दुख होते है उनक लिये केवल एक ही भाषा होती है कि हमारी कोई न कोई भूल होती है, जो भूलता है वही भुगतता है, इसी शरीर के अन्दर एक शरीर और होता है जिसे सूक्ष्म शरीर कहते है।

सूक्ष्म शरीर : हर भौतिक शरीर के अन्दर एक सूक्ष्म शरीर होता है, इस बात का पता पहले नहीं था, मगर जब से लोगों को पुनर्जन्म और ऋषियों द्वारा दिये गये हजारों साल पहले के कारण और आज के वैज्ञानिक युग में आकर उनका दिखाई देना, जिनके बारे में पहले कभी सोचा नहीं हो, वे सामने आयें और उनको देख कर हम लोग यही कहें, कि यह तो बहुत पहले देखा था, या सुना था। मंगल की पूजा के लिये हनुमान जी की पूजा हज़ारों सालों से की जा रही है और मंगल के लिये सभी ने पुराने वेदों की बातों के अनुसार ही उनका अभिषेक आदि करना चालू कर दिया था। मगर जब अमेरिका के नासा नामक संस्थान के वाइकिन्ग मंगल पर भेज कर मंगल का चेहरा प्रकाशित किया, तो लोगों का कौतूहल और जग गया कि वेदों में यह बात किस प्रकार से पता लगी थी कि मंगल का चेहरा एक बन्दर से मिलता है और मंगल एक लाल ग्रह है। इस बात के लिये जितनी बातें जो हम पिछले समय से सुनते आ रहे है। लाल देह लाली लसे अरू धरि लाल लंगूर। बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर। मंगल का रूप अतिवक्र, लोहित और लोहित अंगो सुसज्जित शरीर की कामना बिना सूक्ष्म शरीर की उपस्थिति के पता नहीं चल सकती है।

कारण शरीर : जब कारण पैदा होता है, तभी शरीर सूर्य की तरह से उदय होता है, शरीर को जो भी कार्य संसार में करने हाते है, उन्ही के प्रति इस शरीर का संसार में आना होता है। कार्यो के समाप्त होते ही यह शरीर बिना किसी पूर्व सूचना के चल देता है, पानी–पानी में मिल जाता है। मिट्टी–मिट्टी में मिल जाती है, हवा–हवा में मिल जाता है, आग–आग में मिल जाती है और आत्मा अपनी यात्रा को दूसरे काम के लिये पुनर्जन्म लेने के लिये बाध्य हो जाती है। यही कारण रूपी शरीर की गति कहलाती है।

ज्योतिष से व्यक्तित्व का विभाजन : जब हम किसी बात को सोचते हैं तो कहते है कि पीछे जो हम करके आये है, वह याद क्यों नही रहता है। कल जो होने वाला है हमें याद क्यों नही रहता। प्रकृति से हमारे सामने जो अभी दिख रहा है, वह ही हमें याद रहता है। कल हमने जो किया है, कल क्या होगा, यह हमें दूसरे दिन भूल जाते है। जो व्यक्ति पीछे और आगे की बात को कहता है, उसके लिये ही ज्योतिष विज्ञान का निर्माण किया गया है। इस विज्ञान के द्वारा जन्म के समय जो भी तत्व सामने होते हैं, उनके प्रभाव का असर प्रकृति के अनुसार जो ही पहले हुआ या इतिहास बताता है, उन तत्वों का विवेचन करने के बाद ही ज्योतिष का कथन किया जाता है।

ज्योतिष के अनुसार व्यक्तित्व को दो भागों में विभाजित किया है। पहला– बाह्य व्यक्तित्व और दूसरा आन्तरिक व्यक्तित्व। सौर मण्डल के सातों ग्रह उपरोक्त दोनों व्यक्तिओं को अपने अपने गुण धर्म के अनुसार प्रभावित करती है। सूर्य और चन्द्रमा का प्रत्यक्ष प्रभाव सृष्टि पर दृष्टिगोचर होता है। जिस परिस्थिति के अनुसार जातक का जन्म होता है, उसी के अनुसार जातक का प्राकृतिक स्वभाव बन जाता है, सूर्य के प्रभाव से जाडा, गर्मी, वर्षा ऋतृओं का आगमन होता है और चन्द्र के अनुसार शरीर में पानी का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। प्रवृत्ति, न्याय, अन्याय, सत्य, असत्य प्रेम कला आदि जितने भी जीवन के कारण है। सब के सब ग्रहों के प्रभाव से ही बनते बिगड़ते रहते है। सात ग्रह तो प्रत्यक्ष है और दो छाया ग्रह है। इस प्रकार से वैदिक ज्योतिष में नौ ग्रहों का विवेचन मिलता है।

योग की धारणा के अनुसार महर्षि पतंजलि ने मानव शरीर को पाँच भागों में बांटा है जिसे पंचकोश कहते है। ये कोश एक साथ विद्यमान अस्तित्व के विभिन्न तल समान होते है। विभिन्न कोषों में चेतन, अवचेतन तथा अचेतन मन की अनुभूति होती है। प्रत्येक कोष का एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। वे एक दूसरे को प्रभावित करती है।

1. अन्यमय कोश
2. प्राणमय कोश
3. मनोमय कोश
4. विज्ञानमय कोश
5. आनन्दमय कोश

अन्यमय कोश : अन्न तथा भोजन से निर्मित शरीर और मस्तिष्क। सम्पूर्ण दृष्यमान जगत, ग्रह–नक्षत्र, तारे और पृथ्वी, हमारी आत्मा की प्रथम अभिव्यक्ति है। यह दिखाई देने वाला जड़ जगत जिसमें हमारा शरीर भी शामिल है, जहाँ आत्मा स्वयं को अभिव्यक्त करती रहती है। शरीर कहने का अर्थ सिर्फ मनुष्य ही नही अपितु सभी वृक्ष, लताओं और प्राणियों का शरीर। जो आत्मा इस शरीर को ही सब कुछ मानकर भोग–विलास में निरंतर रहती है वही तमोगुणी कहलाती है। इस शरीर से बढ़कर भी कुछ है। इस जड़ प्रकति जगत से बढ़कर भी कुछ है। जड़ का अस्तित्व मानव से पहले का है। वृक्ष, समुद्र, लताओं से पहले का है। पहले 05 तत्व की सत्ता ही विद्यमान थी। (अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश) इस जड़ को ही शक्ति कहते है–अन्नमय कोश कहते है।

प्राणमय कोश : श्वास लेने से हमारे अन्यमय कोश से जो स्पंदन बाहर की तरफ जाता है उससे हमारे चारों तरफ तरंगो का क्रम बन जाता है, यही हमारा प्राणमय कोश होता है। मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ मनुष्य पूर्ण सांस लेता है तो उसका प्राणमय कोश उत्तम अवस्था में रहता है। प्राणायाम के सतत प्रयोग से प्राणमय कोश को स्वस्थ रखा जा सकता है।

मनोमय कोश : मनोमय कोश मन से बना है। हम जो देखते, सुनते है अर्थात हमारी इन्द्रियों द्वारा जब कोई सन्देश हमारे मस्तिष्क में जाता है तो उसके अनुसार वहॉ सूचना एकत्रित हो जाती है, और मस्तिष्क से हमारी भावनाओं के अनुसार रसायनों का श्राव होता है जिससे हमारे विचार बनते है। जैसे विचार होते है उसी तरह से हमारा मन स्पंदन करने लगता है और इस प्रकार प्राणमय कोश के बाहर एक आवरण बना जाता है यही हमारा मनोमय कोश होता है।

विज्ञानमय कोश : अन्तर्ज्ञान या सहज ज्ञान से बना कोश विज्ञानमय कोश कहलाता है। यह प्राणमय कोश ओर मनोमय कोश के अन्तर में निहित होता है। विज्ञानमय कोश कम्प्यूटर की हार्डडिस्क की तरह होता है। जहॉ पर बुद्धि, चित्त और अहंकार छिपा होता है।

आनन्दमय कोश : आनन्दानुभूति से बना है। इस कोश में मस्ती ही मस्ती है। इसलिए आनन्द का कोई पर्यायवाची शब्द नही है। आनन्दमय कोश में पहुँचना, ब्रह पर पहुँचना होता है।

आर. के. श्रीवास्तव
क्षेत्रीय प्रमुख
हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ

चन्द्रयान–3

हमारा देश विज्ञान में दिन प्रतिदिन प्रगति कर रहा है। आज भारत अमेरिका और रूस जैसे शक्तिशाली देशों को भी विज्ञान क्षेत्र में चुनौती देने में लगा है। इसका सबसे बेहतरीन उदारण 23 अगस्त 2023 का दिन था, जब चन्द्रयान–3 चन्द्रमा की सतह के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक लैंडिंग कर ली है। यह खबर आते ही हमारा देश चन्द्रमा की सतह के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक लैंडिंग करने वाला विश्व का पहला देश बन गया है। इसके पहले 22 जुलाई 2019 को इसरो लैंडर और रोवर का चंद्रमा पर लगभग 70 डिग्री दक्षिण के अक्षांश पर साफ्ट लैंडिग करवाने की पूरी कोशिश की थी लेकिन इसरो की यह कोशिश सफल नही हो पाई थी। उस समय चन्द्रयान का लैंडर विक्रम चांद की सतह से टकरा गया था ओर उसी समय चन्द्रयान 2 का मिशन असफल हो गया था। इस विफलता से वैज्ञानिकों को भारी दुख पहुंचा था लेकिन वैज्ञानिकों ने हार नही मानी। वह लगातार प्रयास करते गए और आखिरकार उनका प्रयास चन्द्रयान–3 के रूप में 23 अगस्त 2023 को पूरा हो गया। इस सफलता के साथ दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाला भारत दुनिया का पहला देश बना गया है।

चन्द्रयान–3 क्या है?

चन्द्रयान–3 भारत का एक ऐसा महत्वाकांक्षी मिशन है जिससे चन्द्रमा की सतर से जुड़ी कई सारी जानकारियां मिलेगी। इस मिशन का सारा श्रेय भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) को जाता है। चन्द्रयान 3 जैसे महत्वपूर्ण मिशन को इसरो द्वारा 14 जुलाई 2023 को लांच किया गया था। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य यह था कि कैसे चंद्रयान चन्द्रमा की दक्षिणी ध्रुव सतह पर सफलतापूर्वक लैंडिंग करेगा। लांचिंग और लैंडिग के बीच 40 दिनों का समय था। इस चन्द्रयान 3 को बनाने में भारतीय टेक्नोलॉजी का ही पूर्ण रूप से प्रयोग किया गया है। इसरो के वैज्ञानिक इस मिशन को सफल बनाने में लिए दिन रात जुटे हुए थे। चन्द्रयान–3 को श्री हरिकोटा अंतरिक्ष केन्द्र से लांच होने की हरी झंडी मिली थी जैसे चन्द्रयान–2 में एक लैंडर और एक रोवर था ठीक उसी प्रकार चन्द्रयान 3 में भी एक लैंडर और एक रोवर शामिल है। इसी के साथ इस बार लैंडर और रोवर के साथ एक आर्बिटर भी रखा गया है। तीनों चीजों का अपना अलग महत्व है। लैंडर का काम होगा यान को सफलतापूर्वक तरीके से चांद पर उतारना। रोवर चांद की सतह रहकर बहुत सारी चीजों की खोज करेगा, तो वहीं आर्बिटर यह अध्ययन करेगा कि चांद पर किस तरह का वातावरण है। चन्द्रयान 3 पूरी तरह से भारतीय तकनीक से बनकर तैयार हुआ है।

चन्द्रयान का इतिहास :?

वर्ष 2008 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने अपना पहला अंतरिक्ष यान चांद पर भेजा था। यह यान भारत का पहला मानवरहित यान माना गया था। इस यान को राकेट की मदद से चांद पर भेजा गया था। चन्द्रयान–1 की अवधि 06 माह और 10 दिन चली थी। इस मिशन का उद्देश्य चांद पर पानी के अंश और हीलियम का पता लगाना था। भारत ने दूसरा इतिहास तब रचा जब भारत ने चन्द्रयान–2 को चांद पर भेजने का फैसला किया। इतने लम्बें अन्तराल बाद भारत की फिर से उम्मीदें जगीं। भारत के वैज्ञानिकों ने चन्द्रयान–2 बनाने में भी किसी भी विदेशी सहायता नही ली थी। 22 जुलाई 2019 को इसरो द्वारा श्री हरिकोटा रेंज से चन्द्रयान–2 को प्रक्षेपित किया गया था। लेकिन इससे पहले कि यह मिशन पूरा हो पाता, इसरों का लैंडर विक्रम से संपर्क टूट गया। दरअसल लैंडर विक्रम चांद की सतह से टकराने के कारण क्रैश हो गया था और चन्द्रयान–2 मिशन सफल नही हो पाया था।

चन्द्रयान–3 से होने वाले लाभ :

चंन्द्रयान 3 भारत का सबसे प्रत्याशित मिशन था। सभी लोग इसके लांचिग के लिए लंबे समय से इंतजार कर रहे थे। इससे पहले 2019 में चन्द्रयान 2 की असफलता के बाद हर कोई चन्द्रयान 3 की सफलता के लिए प्रार्थना कर रहा था। आखिरकार सभी की प्रार्थनाएं सफल हो गई। चन्द्रयान 3 ने सफलतापूर्वक दक्षिण ध्रुव सतह पर भारत का झंडा फहरा दिया। चन्द्रयान 3 के सफल होने से भारत को अनेक प्रकार के लाभ होंगे जैसे :

- चन्द्रयान 3 के सफल होने से अब हमारे वैज्ञानिकों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने में सफलता मिलेगी। अब हमारे देश का मान सम्मान और भी ज्यादा बढ़ जायेगा।
- अब पूरे विश्व में हमारी तकनीकी क्षमताओं पर बहुत ज्यादा विश्वास बढ़ जायेगा।
- हमारा देश दुनिया का ऐसा चौथा देश बन गया है जिसने चांद पर पहुंचने का गौरव हासिल किया है, इसके पहले अमेरिका, रूस और चीन पहले ही यह कारनाम कर चुके है।
- चन्द्रयान–3 ने हमारे देश के लिए मूल इकोनोमी का भी रास्ता खोज लिया है।
- अब हमारे देश की अंतरिक्ष प्रोद्योगिकी में और भी अधिक प्रगति होगी।
- चन्द्रयान–3 की सफलता हमारे देश के युवाओं के लिए भी बहुत महत्व रखती है।
- इस मिशन से यह पता चल पाएगा कि आखिर चांद सही मायने में दिखता कैसा है।
- चन्द्रयान–3 की सफलता हमें असफलताओं से हार नहीं मानने की शिक्षा देती है।

चन्द्रयान–3 के 05 रोचक तथ्य :

1. चन्द्रयान–3 मिशन को सफल बनाने के लिए 615 करोड़ रूपए खर्च हुए हैं।
2. चंद्रयान–3 का जो रोवर है वह वैज्ञानिकों के लिए बहुत लाभदायक साबित होगा। यह रोवर वैज्ञानिकों को चांद पर होने वाली हर गतिविधियों के बारे में जानकारी देगा।
3. चन्द्रयान–3 को लान्च करने का श्रेय वीहिकल मार्क–3 सेटेलाईट को जाता है।
4. चन्द्रमा के साउथ पोल को "डार्क आफ मून" कहकर पुकारा जाता है। चांद का साउथ पोल आज भी दुनिया के लिए रहस्यमय है।
5. 1984 में श्री राकेश शर्मा अंतरिक्ष पर कदम रखने वाले पहले व्यक्ति थे।

संजय कुमार
संयुक्त महाप्रबन्धक (परि.)

हिन्दी भाषा के विकास में प्रौद्योगिकी का योगदान

हिन्दी भाषा के विकास के साथ साथ प्रत्येक क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में प्रौद्योगिकी का विशेष महत्व है। प्रौद्योगिकी की वजह से आज हर भारतीय भाषा विकसति हो रही है। कवियों, लेखको, साहित्यकारों और मनीषियों ने हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके परिणाम भी उत्साहवर्धक रहे हैं। फिल्मों ने हिन्दी को दक्षिण के राज्यों में लोकप्रिय बनाया है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की हिन्दी भाषा को समर्पित ये पंतिक्तयाँ :–

निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को शूल।

प्रौद्योगिकी के माध्यम से जैसे जैसे समय के साथ नये–नये प्रयोग होते गए और नयी–नयी प्रौद्योगिकी विकसित होती गई तो साहित्यकारों–विद्वानों ने उसे प्रयोग में लाना शुरू किया और जन माध्यमों के द्वारा उसे हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार हेतु भी प्रयोग किया जाने लगा और जन–जन का हिन्दी से परिचय होने लगा। प्राचीनकाल मे जन माध्यम के रूप में नृत्य, नाटक, नौटंकी मंचन करने वाले समूह के जरिये गांव–गांव तक अपनी बात, कवि, लेखक पहुंचाया करते थे, इसी तरह हिन्दी को प्रचार–प्रसार का अहम जरिया मिला जो कामयाब हुआ। लोग सुदूर दक्षिण, महाराष्ट्र–गुजरात–मध्य प्रदेश जैसी जगहों पर भी हिन्दी बोलने और समझने लगे। इसी तरह अन्य भारतीय भाषाओं का प्रचार–प्रसार व विकास होता चला गया। काव्य गोष्ठी, नाटक–नृत्य, रंगमंच की प्रस्तुतियां विभिन्न भारतीय भाषाओं में होती और देश के अलग–अलग क्षेत्रों और राज्यों में इन्हें लोग देखते आनन्द उठाते फिर वहां के क्षेत्रीय लोग इस पर चर्चा करत। इस प्रकार अन्य भाषाओं का भी प्रचार–प्रसार होता चला गया।

फिर यूरोप में कागज और छापाखाने का आविष्कार हुआ तो कालान्तर में ब्रिटेन के जरियें उसके गुलाम देशों में होते हुए भारत पहुंचा। धीरे–धीरे यहां पर छापाखाने का और छोटे–छोटे स्तर पर समाचार पत्र का चलन हुआ। इन अखबारों का माध्यम इस क्षेत्र की मुख्य बोली–भाषा होती थी। धीरे–धीरे ये अखबार बड़ा रूप लेते गये और एक बड़े क्षेत्र के विकास का मजबूत स्तम्भ होते रहे। समाचार पत्रों के क्षेत्र विस्तार के साथ उस भाषा का भी विकास एवं विस्तार हो जाता था। इसके साथ विभिन्न भाषाओं में पत्रिकाएं भी छपने लगी। इनको कई तरह के संसाधनों परिवहन के साधनों के द्वारा दूर तक पहुंचाया जाने लगा। इसमें स्तरीय लेख काव्य कहानियों के जरिये जनता का परिचय विकसित भाषाओं से होने लगा।

19वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षो में आकाशवाणी का अभ्युदय हुआ और समय के साथ भारत में भी इसकी शुरूआत हुई। भाषा के विकास में एक बड़ा सशक्त आयाम जुड़ गया। आरंभिक वर्षो ने दिल्ली, मुम्बई केन्द्रो की स्थापना के बाद देश के अन्य बड़े शहरों में स्थानीय क्षेत्रीय केन्द्र स्थापित हुए। यहां पर भारत की विभिन्न भाषाओं को एक मंच मिला। हिन्दी भाषा भी अन्य भाषाओं के साथ–साथ जुगलबंदी करते हुए अपना प्रसार करते हुए विकास के सोपान पर चढ़ती चली गई।

कम्प्यूटराइज़ेशन होने से हिन्दी के विकास में गति मिल गई। कम्प्यूटर के माध्यम से जिन्हें हिन्दी का ज्ञान नही होता है वह भी गूगल इनपुट टूल्स की मदद से हिन्दी में टाइपिंग कर लेते है। गूगल के माध्यम से किसी भी भाषा का अनुवाद हिन्दी में हो जाता है, या फिर हिन्दी का अनुवाद अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में हो जाता है। इस प्रौद्योगिकी ने हिन्दी सहित सभी क्षेत्रीय भाषाओं को पंख लगा दिया है।

राजीव शर्मा
उप महाप्रबन्धक (आई.टी.)

हिन्दी बढ़ेगी तभी, जब चाहेंगे सभी।

एकल उपयोग प्लास्टिक - प्रतिबंध और जागरूकता

प्लास्टिक उपयोग की शृंखला में स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव देखा गया है। उदाहरणों में निष्कर्षण स्थलों पर प्रदूषण, श्रमिकों का रसायनों के संपर्क में आना, अपशिष्ट भस्मीकरण से वायु प्रदूषण और पानी और मिट्टी का प्रदूषण शामिल हैं। बच्चों, महिलाओं, अनौपचारिक अपशिष्ट क्षेत्र के श्रमिकों और हाशिए पर रहने वाले समुदायों सहित कमजोर समूहों को विशेष रूप से प्रभावित करता है। जिससे मानव अधिकारों और पर्यावरणीय अन्याय की चिंता बढ़ जाती है। प्लास्टिक के प्रतिकूल प्रभाव विशेष रूप से गर्भ में पल रहे बच्चों और छोटे बच्चों पर होते हैं, जिनमें समय से पहले जन्म, मृत बच्चे का जन्म, प्रजनन अंगों में जन्म दोष, न्यूरोडेवलपमेंटल हानि, बिगड़ा हुआ फेफड़ों का विकास और बचपन में कैंसर का खतरा बढ़ जाता है. (प्लास्टिक और स्वास्थ्य पर माइंडरू.मोनाको आयोग), 2023) प्लास्टिक जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ते तापमान और चरम मौसम की भी घटनाओं से जुड़े कई स्वास्थ्य जोखिमों में योगदान देता है।

प्लास्टिक प्रदूषण एक नई लेकिन तेजी से बढ़ती घटना है। पिछले दशकों में वार्षिक वैश्विक प्लास्टिक उत्पादन में विस्फोट हुआ है, जो 1950 में लगभग 1.5 मिलियन मीट्रिक टन (एमटी) से बढ़कर 2021 में आश्चर्यजनक रूप से 390.7 मिलियन मीट्रिक टन हो गया है, जो चार प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर्शाता है। आने वाले दशकों में प्लास्टिक उत्पादन में और वृद्धि होने की उम्मीद है क्योंकि पेट्रोकेमिकल बुनियादी ढांचे में मौजूदा निवेश इस प्रवृत्ति का समर्थन करते हैं। सामान्य व्यवसाय परिदृश्यों के तहत, प्राथमिक प्लास्टिक का वैश्विक उत्पादन 2050 तक 1,100 मिलियन टन तक पहुंच सकता है। प्लास्टिक उत्पादन में जारी उछाल जीवाश्म ईंधन पर इसकी निर्भरता और प्रमुख क्षेत्रों में पेट्रोकेमिकल बुनियादी ढांचे में बड़े निवेश से जुड़ा हुआ है। प्लास्टिक प्रदूषण के दायरे और प्रभावों को ध्यान में रखते हुए, सरकारों, नागरिक समाज और शिक्षाविदों की बढ़ती संख्या प्लास्टिक उत्पादन को कम करके इसके स्रोत पर संकट से निपटने के प्रयासों का आह्वान कर रही है। वर्तमान ऊर्जा संदर्भ में, विशेषज्ञ जलवायु और प्रदूषण प्रवासन में योगदान करते हुए गैस पर निर्भरता को कम करने के तरीके के रूप में गैर-आवश्यक प्लास्टिक के उत्पादन में कमी की ओर भी इशारा कर रहे हैं।

चूंकि केवल 1.13 प्रतिशत प्लास्टिक की वस्तुओं का पुनर्चक्रण किया जा सकता है। बाकी या तो भूमि या जल निकायों में दब जाती हैं, अंततः महासागरों तक पहुंच जाती हैं, जिससे जल निकायों का प्रदूषण होता है और समुद्री जीव की मृत्यु हो जाती है। अधिकांश प्लास्टिक बायोडिग्रेडेबल नहीं है और समय के साथ प्लास्टिक टूट जाता है और जहरीले रसायनों को जल निकायों में छोड़ देता है, जो बदले में भोजन और पानी की आपूर्ति में अपना रास्ता बनाते हैं। एसयूपी (सी2एच4) एन, गलनांक : 115.135 डिग्री सेल्सियस घनत्व, 0.88– 0.96 ग्राम/सेमी3 के उपयोग के कारण उत्पन्न होने वाले विभिन्न पर्यावरणीय और चिकित्सा संबंधी खतरे, पॉलीइथिलीन मोनोमर एथिलीन से बने विनाइल पॉलीमर है।

भारत में प्लास्टिक की समस्या: - दुनिया के महासागरों में हर साल फेंके जाने वाले प्लास्टिक के लगभग 60% के लिए भारत जिम्मेदार है। हमारे प्लास्टिक का 42% से अधिक उपयोग पैकेजिंग में है। भारत हर दिन लगभग 25,940 टन प्लास्टिक कचरा का उत्पादन करता है। प्लास्टिक के उत्पादन में इस्तेमाल होने वाले रसायन मानव शरीर के लिए जहरीले और हानिकारक होते हैं। प्लास्टिक कई तरह से खतरनाक हो सकता है। सीसाए कैडमियम और पारा जैसे रसायन सीधे मानव के संपर्क में आ सकते हैं। वे समुद्र में कई मछलियों में पाए गए हैं।

ये विषाक्त पदार्थ कैंसर, जन्मजात विकलांगता, प्रतिरक्षा प्रणाली की समस्याओं और बचपन के विकास के मुद्दों का कारण बन सकते हैं। बीपीए या स्वास्थ्य-बिस्फेनॉल-ए जैसे अन्य विषाक्त पदार्थ प्लास्टिक की बोतलों या खाद्य पैकेजिंग सामग्री में पाए जाते हैं। जब बीपीए की बहुलक श्रृंखलाएं टूट जाती हैं और दूषित पानी या मछली के माध्यम से मानव शरीर में प्रवेश करती हैंए तो इससे हमारे शरीर को गंभीर नुकसान हो सकता है। बीपीए थायराइड हार्मोन रिसेप्टर को कम कर सकता है जिससे हाइपोथायरायडिज्म हो सकता है। सिंगल.यूज प्लास्टिक आइटमरू सिंगल.यूज प्लास्टिक आइटम में प्लास्टिक बैगए पानी की बोतलेंए सोडा की बोतलेंए स्ट्रॉए प्लास्टिक प्लेट, कप, ज्यादातर फूड पैकेजिंग और कॉफी स्टिरर आदि शामिल हैं।

हम प्लास्टिक के उपयोग से कैसे बच सकते हैं? :-

* पानी खरीदना बंद करो। प्लास्टिक की बोतलें प्लास्टिक के कबाड़ में सबसे ज्यादा योगदान करती हैं, क्योंकि लगभग 20 मिलियन बोतलें कचरे में फेंक दी जाती हैं।

'हमेशा अपना शॉपिंग बैग अपने साथ रखें। हालांकि यह एक छोटी सी बात लगती है, लेकिन अगर लगन से इसका पालन किया जाए तो आप प्लास्टिक बैग के इस्तेमाल को कम कर सकते हैं।

'प्लास्टिक की थैलियों के बजाय कार्डबोर्ड चुनें। कार्डबोर्ड बायो.डिग्रेडेबल है और इसलिए पर्यावरण के अनुकूल है। चाहे आप घर पर हों या रेस्टोरेंट, कोशिश करें कि स्ट्रॉ का इस्तेमाल कम से कम करें।

'पैकेजिंग कचरे को कम करने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक थोक में खरीदारी करना है। इससे आपके घर से प्लास्टिक का कचरा भी कम होगा।

अपने भोजन को टिफिन-बॉक्स या कांच के कंटेनर आदि में स्टोर करने का प्रयास करें।

पर्यावरण मंत्रालय ने पहले ही 50 माइक्रोन की सीमा को बढ़ाते हुए 75 माइक्रोन से कम के पॉलिथीन बैग पर प्रतिबंध लगा दिया था। मंत्रालय ने 31 दिसंबर 2022 से देश में 120 माइक्रोन से कम मोटाई वाले प्लास्टिक बैग को भी खत्म कर दिया है। प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के अनुसार, पान मसाला, गुटखा और तंबाकू की पैकिंग, भंडारण या बिक्री के लिए प्लास्टिक सामग्री का उपयोग करने वाले पाउच पर भी व्यापक प्रतिबंध है। विश्व पर्यावरण दिवस 2023 प्रत्येक व्यक्ति, समुदाय और सरकार के लिए कार्रवाई के आह्वान के रूप में कार्य करता है। अब कार्रवाई का समय आ गया है। स्थायी आदतों को अपनाकर, सामुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा देकर, प्रभावी नीतियों की वकालत करके और शिक्षा और जागरूकता को बढ़ावा देकर, हम न केवल पृथ्वी के निवासी और इसके देखभालकर्ता बन सकते हैं।

8 सितंबर 2023 को नई दिल्ली में जी-20 ने भी घोषणा की है कि सभी प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस संदर्भ में, G-20 ने UNEP/EA.5/Res.14 के प्रस्ताव का स्वागत किया है, जिसने समुद्री पर्यावरण सहित प्लास्टिक प्रदूषण पर एक अंतरराष्ट्रीय कानूनी रूप से बाध्यकारी उपकरण विकसित करने की महत्वाकांक्षा के साथ एक अंतर सरकारी वार्ता समिति (INC) की स्थापना की है। इसका काम 2024 के अंत तक होगा। हम ओसाका ब्लू ओशन विजन में बताए गए जी20 समुद्री कूड़ा एक्शन प्लान पर भी काम करेंगे।

संजय कुमार
संयुक्त महाप्रबन्धक (परि.)

परिश्रम, शरीर को स्वस्थ, मस्तिष्क को साफ, हृदय को उदार रखता है।

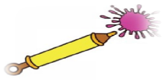

होली

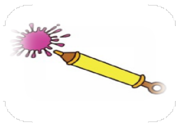

मै हरयाने का किसान
पंजाब और हिमाचल का भी
भारत के अन्य प्रान्तों से भी
रवि की लहलहाती फसल देख
हर्षोल्लासित होकर|
सबको रंग से भिगोता हूँ
और होली मनाता हूँ |

*****

मै ब्रज का छोरा
बरसाने की गोरी देख
पुल्कित होने वाला
पर लज्जा से
कुछ ना कहने वाला
पर फाल्गुन के नशे में
उसको रंग बिरंगी बनाकर
मस्ती से भर जाता हूँ |
ऐसे मै होली मनाता हूँ |

*****

मै देश का जवान
सीमा पर अडिग अचल
सुरक्षा का लेकर संकल्प
परिवार से दूर सुदूर
विपरीत परिस्थितियों में भी
देश की आन-बान पर
खुद न्योछावर हो जाता हूँ |
मै प्रतिदिन होली मनाता हूँ |

*****

मै देश का गरीब इन्सान
विकट परिस्थितियों से जूझते हुए
दिन रात संघर्षरत होते हुए
मेरे भी सुधरेंगे दिन कभी
इस आस की पिचकारी से
फाल्गुन के महीने में
सबको रंगीन करते हुए
दुःख दर्द भूल जाता है |
हाँ मै भी होली मनाता हूँ |

*****

मै रत्न प्रकाश
इस कक्ष में
अपने साथियों के साथ
मेरे छोटे भाई बहनों के साथ
दो पल आनंद के
खाने-पीने में साथ के
ब्यतीत कर मुस्कराता हूँ
सबको खुश देख कर
झूम-झूम जाता हूँ |
हाँ मै होली मनाता हूँ |

रत्न प्रकाश
महाप्रबंधक (वित्त)

राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संशोधित 1967) से सम्बन्धित जानकारी

प्रश्न 1	राजभाषा अधिनियम कब पारित पारित हुआ ?	10 मई 1963
प्रश्न 2	राजभाषा अधिनियम को क्या कहा जा सकेगा?	राजभाषा अधिनियम 1963 यथा संशोधित 1967
प्रश्न 3	राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) कब से लागू हुआ	26 जनवरी 1965
प्रश्न 4	राजभाषा अधिनियम की धारा 2(ख) के अनुसार हिन्दी से आशय क्या ?	हिन्दी से वह हिन्दी अभिप्रेत है जिसकी लिपि देवनागरी है।
प्रश्न 5	राजभाषा अधिनियम कब संशोधित हुआ ?	1967
प्रश्न 6	राजभाषा अधिनियम 1963 यथा संशोधित 1967 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले दस्तावेजों को किस भाषा में जारी करना अनिवार्य है ?	हिन्दी और अग्रेजी द्विभाषी रूप में।
प्रश्न 7	राजभाषा अधिनियम 1963 यथा संशोधित 1967 की किस धारा के उपबंधो के अनुसार संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया ?	धारा 4(1)
प्रश्न 8	राजभाषा अधिनियम समिति के सदस्यों का निर्वाचन किस प्रकार किया जाता ?	लोकसभा तथा राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा।
प्रश्न 9	राजभाषा अधिनियम 1963 यथा संशोधित 1967 की कौन कौन सी धारा के उपबंध जम्मू कश्मीर राज्य में लागू नही होती ?	धारा 6 और 7
प्रश्न 10	राजभाषा अधिनियम 1963 यथा संशोधित 1967 की कौन सी धारा के तहत केन्द्र को नियम बनाने की शक्ति प्रदान की गई है ?	धारा 8
प्रश्न 11	राजभाषा अधिनियम 1963 यथा संशोधित 1967 3(1)(ख) के अनुसार संघ और किसी ऐसे राज्य जिसने हिन्दी को राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया के बीच पत्राचार में किस भाषा का प्रयोग किया जायेगा ?	अंगेजी
प्रश्न 12	राजभाषा अधिनियम 1963 यथा संशोधित 1967 3(1)(ख) के अनुसार संघ और किसी ऐसे राज्य जिसने हिन्दी को राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया और ऐसे राज्य जिसने हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाया के बीच पत्राचार में किस भाषा का प्रयोग किया जायेगा	हिन्दी को प्रयोग में लाया जायेगा साथ ही उसका अनुवाद अंगेजी भाषा में भेजा जायेगा।
प्रश्न 13	राजभाषा अधिनियम संशोधित रूप में कब पारित पारित हुआ ?	16 दिसम्बर 1967
प्रश्न 14	राजभाषा अधिनियम में कुल कितनी धाराए हैं ?	9 (नौ)

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएँ

आठवीं अनुसूची
(अनुच्छेद 344(1) और 351)

1. असमिया 2. उर्दू 3. कश्मीरी 4. तमिल 5. पंजाबी 6. मराठी 7. मलयालम 8. सिन्धी 9. मणिपुरी 10. कोकड़ी 11. डोंगरी		12. उड़िया 13. कन्नड़ 14. गुजराती 15. तेलगू 16. बंगला 17. संस्कृति 18. हिन्दी 19. नेपाली 20. मैथिली 21. बोड़ो 22. संथाली

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले कागजात

1. सामान्य आदेश 2. अधिसूचनाए 3. संविदा 4. लाइसेंस 5. टेंडर फार्म और नोटिस 6. नियम 7. संसद में प्रस्तुत सरकारी प्रशासनिक/ अन्य रिपोर्ट		8. सूचनाएं 9. प्रेस विज्ञप्तियां/प्रेस नोट 10. करार 11. परमिट 12. संकल्प 13. संसद में प्रस्तुत सरकारी प्रलेख/कागजात 14. प्रशासनिक/अन्य रिपोर्ट

सामान्य आदेश में निम्नलिखित दस्तावेज सम्मिलित है :–

1. ऐसे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लियें हों तथा स्थायी प्रकार के हों।
2. ऐसे सभी ओदश, अनुदेश, पत्र ज्ञापन आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के सम्बन्ध में हों या उनके लिये हों।
3. ऐसे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हो या सरकारी कर्मचारियों के लिये हों।

नोट :– उक्त दस्तावेजों पर हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी का यह दायित्व है कि ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने से पूर्व उनका द्विभाषी (हिन्दी–अग्रेजी) होना सुनिश्चित करें।

राजभाषा नियम 1976 से सम्बिन्धित प्रश्न

प्रश्न 1	राजभाषा नियम कब पारित हुआ ?	17 जुलाई 1976
प्रश्न 2	राजभाषा नियम कब संशोधित हुआ ?	09 अक्टूबर 1987
प्रश्न 3	राजभाषा नियम का विस्तार किस राज्य के सिवाय संपूर्ण भारत पर है ?	तमिलनाडु
प्रश्न 4	राजभाषा नियम 1976 के अनुसार देश को कितने क्षत्रों में वर्गीकृत किया गया है ?	तीन (क, ख और ग क्षेत्र)
प्रश्न 5	राजभाषा नियम 1976 के नियम 4(क) के अनुसार केंन्द्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्राचार किसी भाषा में किया जा सकता है ?	हिन्दी में
प्रश्न 6	राजभाषा नियम 1976 के नियम 4(ख) के अनुसार केंन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से क्षेत्र 'क' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र या व्यक्ति को पत्र किस भाषा में भेजा जाएगा ?	हिन्दी
प्रश्न 7	राजभाषा नियम 1976 के नियम 12(1) के अनुसार राजभाषा अधिनियम और नियमों के उपबंधों का अनुपालन कराने का उत्तरदायित्व किसका है ?	कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का।
प्रश्न 8	राजभाषा नियम 1976 के नियम 11(2) के अनुसार केन्द्र सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक किसी भाषा में लिखे जाने चाहिए ?	हिन्दी और अंग्रेजी द्विभाषी
प्रश्न 9	राजभाषा नियम 1976 के किस नियम के तहत हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिया जाना आवश्यक है ?	नियम–5
प्रश्न 10	राजभाषा नियम 1976 के नियम 7(1) के अनुसार कोई भी कर्मचारी अपना आवेदन अपील या अभ्यावेदन किस भाषा में लिख सकता है ?	हिन्दी या अंग्रेज़ी में
प्रश्न 11	राजभाषा नियम 1976 के नियम 8(1) के अनुसार कोई भी कर्मचारी किसी फाईल पर टिप्पणी या मसौदा किस भाषा में लिख सकता है ?	हिन्दी या अंग्रेज़ी में
प्रश्न 12	राजभाषा नियम 1976 के नियम 8(2) के अनुसार कोई भी हिन्दी का कार्यसाधक कर्मचारी हिन्दी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी में मांग कर सकता है ?	जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकति का हो।
प्रश्न 13	राजभाषा नियम 1976 के नियम 8(3) के अनुसार कोई दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नही इसका निर्णय कौन करेगा ?	विभाग या कार्यालय का प्रमुख
प्रश्न 14	राजभाषा नियम 1976 के अनुसार दादर नागर हवेली और दमन दीव किसी क्षेत्र के अर्न्तगत आते है ?	ख क्षेत्र
प्रश्न 15	राजभाषा के किस नियम में प्रवीणता की परिभाषा दी गई है ?	नियम – 9 में
प्रश्न 16	राजभाषा के किस नियम में कार्यसाधन ज्ञान की परिभाषा दी गई है ?	नियम – 10 में

सुनील कुमार
वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)

''अधिक अनुभव, अधिक सहनशीलता और अधिक अध्ययन यही विद्वता के तीन महास्तंभ है''

खाने की थाली

आयुर्वेद विज्ञान से हमारा शरीर 5 तत्वों, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से बना है। इसी तरह हम जो भी खा रहे है वह भी 5 तत्वों से बना है, चाहे सब्जी हो दाल, चावल, आटा या फिर किसी दूसरी चीज। इन 5 तत्वों को हमें 6 रसों के हिसाब से खाना चाहिए। वहीं यह भी जरूरी है कि शरीर के 5 तत्वों को अच्छी तरह समझने के लिए हमें शरीर के तीनों दोषों (वात, पित्त और कप) को भी समझना होगा कि किसके शरीर में किस प्रकार की कमी है, और कौन सी अधिकायत मात्रा में है। जिस व्यक्ति के शरीर में जो दोष अधिक होगा, उसे बाहर से कम मात्रा में खाना है। इसके अतिक्रित प्रकति के तीन गुण है : सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण। ये हमारी मानसिक स्थितियों को बताते है। अपनी प्रकृति जाने उसी के हिसाब से भोजन करें।

खाने में आपकी थाली में 06 रस होने चाहिए : –

मधुर रस : यह रस हमारे भोजन का अहम हिस्सा है। अधिकतर लोगों की थाली में यह सबसे अधिक मात्रा में मौजूद होता है। दरअसल हम जो भी कार्बोहाइड्रेट (चावल, रोटी, दूध, घी आदि) खाते है, मधुर रस में आता है।

अम्ल : इसकी मात्रा थोड़ी, लेकिन जरूर होनी चाहिए। इसमें खटाई चटनी, नीबू, टमाटर, आदि आते हैं। दरअसल, ये पेट की अग्नि को प्रदीप्त यानी जलाने का कार्य करते है। यह ठीक उसी तरह है जैसे घर में गैस आन करने के लिए लाइटर या माचिस से चूल्हा जलाते है।

लवण : इसमें नमकीन चीजें आती है। कोई भी नमक खाएं लेकिन कम ही खाएं एक दिन में 4–5 ग्राम नमक से ज्याद न लें। यह एक छोटे चम्मच से अधिक नही होनी चाहिए। पूरी दुनिया में सबसे अधिक नमक भारत में खाया जाता है। ज्यादा नमक से बी0पी0 बढ़ता है। किडनी पर असर पड़ता है। सेधा और समुद्री नमक में एक बड़ा फर्क यह है कि सेंधा नमक को किसी प्रोसेस या केमिकल से साथ नही किया जाता जबकि समुद्री नमक को प्रोसेस करके बनाया गया है। सेंधा नमक में थोड़ी मात्रा में मैग्नीशियम भी होता है।

कटु : यह तीखा होता है। इसमें मिर्च, अदरख, काली मिर्च आदि आते है। जिन्हें पित्त दोष होता है उन्हें यह चीजें कम खाना चाहिए। ये अग्निकार होते है। कफ प्रकति वाले लोग इन्हें ले सकते है।

तीक्त : इसमें कड़वी चीजें शामिल है। जैसे नीम पत्ता, मेथी, कड़ी पत्ता, हल्दी, काफी सब्जियां आदि। इन्हें भी हर दिन भोजन का हिस्सा बनाना चाहिए। हमारे पारंपरिक भोजन पद्धति में हम इन्हें कहीं न कहीं उपयोग कर ही लेते है। दरअसल, शरीर की पाचन क्रिया को मजबूत बनाने में उपयोग होता है। इनसे कोलेस्ट्रल भी दूर होता है।

कषाय : इसे कसैला भी कहते है। यह भी अमूमन हमारे हर दिन के भोजन का हिस्सा होता है। इसमें दालें, साग, और पत्ते वाली सब्जियां, अंडा शामिल होता है। ये प्रोटीन के बेहतरीन सोर्स होते है। दरअसल प्रोटीन युक्त भोजन अमूमन कषाय में ही शामिल होता है।

एक आदर्श थाली में उपरोक्त सभी रस शामिल होने चाहिए।

रवि रंजन चौधरी
प्रबन्धक (वित्त)

मानव जीवन में मातृत्व शक्ति

स्त्री शक्ति स्वरूपा है। प्रकृति ने स्वयं ही स्त्री को परमशक्ति से सम्पन्न बनाया है। समाज के सृजन के लिए मूल शक्ति नारी को ही प्राप्त है। प्राणी जन्म लेते ही मां को ही स्मरण करता है। उसी की गोद में उसका पालन पोषण होता है। एक क्षण भी शिशु मां से विलग नहीं होना चाहता। बच्चे की सबसे बड़ी भूख मां की ममता होती है। मां के आंचल में लिपटने में ही उसे परम सुख की अनुभूति होती है। स्त्री को यह अधिकार प्रकृति प्रदत्त है। इस अधिकार के लिए किसी और का ऋणी नही होना है। शिवाजी, महाराणा प्रताप जैसे वीरों की शक्ति किसी मां से ही प्राप्त है। घर की सारी सुख शान्ति एक सुगृहिणी पर निर्भर है।

. गृहणी गृहम् इत्यादुः गृहणी गृहम् उच्यते।
गृहम ही गृहणी हीनम् अरण्य सदृशम् मतम्।

इस प्रकार स्त्रियों को प्रकृति ने स्वयं ही महान बनाया है। जो अधिकार मांगने से मिलता है वह तुच्छ है। नारी आदिकाल से स्वयं में ही वन्दनीय और पूजनीय है। सम्पूर्ण वांगमय इन्हीं का गुणगान करता है।

मातृ देवो भव,
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्व देवता।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल से
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर सम तल में।

काव्य में स्त्री का शक्ति सम्पन्न स्वरूप सर्वत्र उपमान बन गया है।

वास्तव में स्त्री जाति ने सदैव इस समाज रूपी बेल को अभिसिंचित किया है। नारी ने आजीवन सर्वत्र शक्ति का संचार किया है, इसलिए सदैव प्रथम स्तर पर इनको पूजनीय स्थान प्राप्त है। इनके बलिदानी स्वरूप के आगे समाज सदैव नतमस्तक रहा है।

समाज में भौतिकवाद को वृद्धि और नैतिक मूल्यों के पतन का प्रभाव स्त्री जाति पर भी पड़ा है। स्त्रियों ने भी झूठे अधिकारों को प्राप्त करना ही अपने कर्तव्यों की इतिश्री मान लिया है। इस यह कोई अच्छी बात नही है। जोड़–तोड़ कर अपने सामाजिक अधिकारों को प्राप्त करना अनुचित है। अपने वास्तविक कर्तव्यों से मुख मोड़ना प्रारम्भ कर दिया है जिससे गृहस्थ जीवन से शान्ति छिनती जा रही है। परिवार तीव्र गति से टूट रहे है। परिवाजनों में प्रेम और विश्वास में कमी आ रही है। इसी लिए आये–दिन विवाह विच्छेदन हो रहे है। पारिवारिक विवाद बढ़ रहा है। वृद्धों को विधवा आश्रम में रहना पड़ रहा है। यह नये भारत के लिए एक अभिशाप है।

स्त्रियों को अपने मूल कर्तव्यों के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। सम्पूर्ण जगत में भारतीय पारिवारिक व्यवस्था सर्वोपरि रही है। इस धरोहर को संजो कर रखने में स्त्रियों को सजग रहने की आवश्यकता है ताकि भारत भूमि का मूलस्वरूप बना रह सके।

आरती शर्मा
वरि0 प्रबन्धक (सचि0)

धैर्य जीवन के लक्ष्य का द्वार खोल देता है, क्योंकि धैर्य के अतिरिक्त उस द्वार की कोई और कुंजी नही है।

हिन्दी पखवाड़ा

आइए हिन्दी का मौसम आया है।
क्यों कतराते हो पास आने से,
क्यों कतराते हो पास आने से,
पास बैठो पखवारा आया है।.....
आइए हिन्दी का मौसम आया है।
कुछ हिन्दी की कथा व्यथा सुनाना है
प्रतियोगिताएं तो बस एक बहाना है।
आवो साथ बैठे आज लंच आया है।
आइए हिन्दी का मौसम आया है।
हम बुलाते है, वह आते नही।
चार आते है, चार भाग जाते है ।
हम थे जहॉं, वही रह जाते है।
मित्रों तुमने बहुत मन दुखाया है।
आइए हिन्दी का मौसम आया है।
हिन्दी में माहिर, काम में नही कच्चे हो।
बहुत पढ़ ली हिन्दी, अब नही बच्चे हो।
फिर क्यों मीटिंग में आने से बचते हो।
मम्मी पापा ने हिन्दी बहुत पढ़ाया है।
आइए हिन्दी का मौसम आया है।
हिन्दी है हमारी हम हिन्दी के।
हिन्दी तुम्हारी बन जाये तुम हिन्दी के।
विश्व में हिन्दी ने ध्वज फहराया है।
आइए हिन्दी का मौसम आया है।
15 नही 365 दिन हिन्दी में काम करना है।
बस हिन्दी में काम काम का मंत्र रटना है।
आज हिन्दी पखवाड़े का समापन करना है
लेकिन हिन्दी में काम करते रहना है
देखों अयाज़ गीत हमने गाया है।
आइए हिन्दी का मौसम आया है।

अयाज़ उद्दीन
सहायक महा प्रबन्धक (परि.)

''अपने अमूल्य समय का एक–एक क्षण परिश्रम में व्यतीत करना चाहिए, इसी में आनन्द है''
''सबसे बेहतरीन नजर वो है जो अपनी कमियों को देख सके, क्योंकि नींद तो रोज खुलती है पर आँखे कभी–कभी''

"चाटुकारिता"

जी हज़ूरी शान-ओ-शौकत बन गयी है
चापलूसी अब तो दौलत बन गयी है ,

काबिलों की महफ़िलें थीं कभी यहाँ
नकारों की अब ये इज़्ज़त बन गयी है ,,

मोहब्बत थी कभी तो हर दिलों में
हर वो धड़कन अब तो नफरत बन गयी है ,,

मैंने माँगा था खुदा से सुकूँ-ए-ज़खीरा
पर ज़माने की हवस में ये भी हसरत बन गयी है ,,,,

सरजमीं ये कभी रौनकज़दा हुई है
नामुरादों की अब ये ग़फ़लत बन गयी है ,,,,

चैन-ओ-अमन की जिंदगी भी
अब तो फिरकापरस्तों की हरकत बन गयी है ,,,,

वायदे भी निभाए कभी जान देकर
वादा-खिलाफी अब तो बरक़त बन गयी है ,,,

' मोहब्बतों की दुकानें ' थी कभी जहाँ
रंजिशों की वहां पे ईमारत बन गयी है ,,,,।

जीहज़ूरी शान-ओ-शौकत बन गयी है
चापलूसी अब तो दौलत बन गयी है ,।।।।.

डॉ. दीपक कुमार राय
वरिष्ठ प्रबंधक (विधि)

ऋषि एवं कृषि परम्परा का द्योतक है श्रावण मास

जब श्रावण नक्षत्र में पूर्णिमा होती है, तब उस मास को श्रावण कहा जाता है। निर्धारण ज्योतिशीय गणना के आधार पर होता है। इस पूर्णिमा को श्रावणी पूर्णिमा कहा जाता है। इसमें श्रावणी उपाकर्म और रक्षाबंधन पर्व मनाया जाता है। श्रावण भगवान शिव का नक्षत्र होता है। इसलिए इस मास को भगवान शिव को समर्पित किया जाता है। धाार्मिक महत्व के साथ साथ किसानों के लिए भी श्रावण माह महत्वपूर्ण है। वृक्षारोपण के लिए श्रावण मास ही महत्वपूर्ण है। वर्षा ऋतु में जो भी पौधें लगाए जाते हैं वह अनिवार्य रूप से जड़ पकड़ लेते हैं। इसलिए श्रावण मास ही नही बल्कि पूरी वर्षा ऋतु, कृषि और ऋषि परम्परा को बढ़ावा देता है।

धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से इस मास की महिमा शिव महापुराण, स्कंद पुराण तथा धर्म भाास्त्र में विस्तार से वर्णित की गई है। यह ऋषि संस्कृति का श्रेष्ठ संकेतक मास है। भारत कृषि प्रधान देश है। श्रावण की वर्षा कृषि के लिए लाभकारी होती है। इसी कारण इस मास के आने पर जन–मन अतिशय उल्लासित होता है। गर्मी से व्याकुल चित्त प्रकृति सावन के फुहारों से संतृप्त होती हुई आनंद उत्सव मनाने लगती है। भगवान शिव की जटा की तरह आकाश मंडल में फैले मेध और उनसे सृवित जलधारा गंगा की पवित्रता और मलय की शीतलता से सर्वजन को अवलंबित कर देती है। इस मास में भगवान शिव को अर्पित किया जाने वाला बेलपत्र स्वर्ण पत्र के सदृ माना गया है। शिव को समर्पित जल का पुण्य सभी नदियों व समस्त सागर केजल का प्रतिनिधित्व करता है। किसान अपनी खेती का कार्य प्रारम्भ कर देता है। देश के कुछ असंचित क्षेत्र है जहॉ वर्षा के जल का ही सहारा होता है। वहॉ का किसान प्रफुल्लित होकर अल्प जल वाली फसलों का बीजारोपण करता है। इस प्रकार सावन ऋषि एवं कृषि को अमृत से भर देता है।

कान्ती बल्लभ
उप प्रबन्धक (वित्त)

फूल खिलने दो, मधुमक्ख्यिँ अपने–आप उसके पास आ जायेगी। चरित्रवान बनो, जगत् अपने–आप मुग्ध हो जायेगा।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।

भारतेन्दु हरिश्चन्द

हमारी विरासत–भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति का आदि श्रोत वैदिक दर्शन है। ऋग्वेद में दर्शन, संस्कृति व सभ्यता के महत्वपूर्ण श्रोत हैं। परन्तु आज मनुष्य अपनी संस्कृति को भूलता जा रहा है और पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने की होड़ सी लगाये हुए है। हमारी प्राचीन संस्कृति में बहुत कुछ या यह कहें कि सर्वस्व गुण विद्यमान हैं जो पाश्चात्य संस्कृति में देखने को भी नहीं मिलता है। आधुनिकता तो ठीक है, परन्तु यह ठीक नहीं है कि वह अपने संस्कारों को भूल जाए।

मनुष्य अपनत्व में जीना चाह रहा है और हमारे समाज में ऐसा हो भी रहा है। जो मैंने बचपन में देखा है वह आज देखने को नहीं मिल रहा है। तब संयुक्त परिवार अधिकतर होते थे विरला ही एकल परिवार देखने को मिलता था और आज बिल्कुल उसके विपरीत है अर्थात् आज विरला ही संयुक्त परिवार देखने को मिलता है। माता–पिता भाई–बहन के साथ न रहकर वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ अकेले रहना चाहता है। बड़ों का आदर भूलता जा रहा है। माता–पिता की सेवा करने में उसकी कोई रूचि नहीं रहती है, लेकिन वह यह भूल जाता है कि भविष्य में उसका अपना पुत्र भी ऐसा कर सकता है, क्योंकि समाज या घर का जैसा परिवेश होगा उसका असर भी उसके बच्चे पर पड़ेगा। समाज में लोगों की धारणा बिल्कुल बदल रहीं है और वह अपने को अलग और श्रेष्ठ दिखाने में लगा रहता है। तरह–तरह के दिखावे में जीता है। इन्हीं सब आडम्बरों के कारण समाज में अनेक प्रकार की कुरीतियॉ फैल गयी हैं। मनुष्य एक दूसरे को नीचा दिखाने में लगा रहता है, जो हमारी संस्कृति पर बहुत बड़ा कुठाराघात है।

आज मनुष्य पैसे के पीछे भाग रहा है और पैसे की लालच में आकर बुरा कार्य भी करने लगता है। आज पैसे के लिए लोग माता–पिता और भाई–बहन का खून भी कर देते हैं। इसीलिए हमारे देश में भ्रष्टाचार का ग्राफ दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है। हम सबको इस चुनौतियों से निपटने के लिए एक साथ कार्य करने की जरूरत है।

सब एक दूसरे की सहायता करने के लिए हर समय तत्पर रहे और जो लोग या समाज इस प्रकार की कुरीतियों में लिप्त हैं उनको समझाकर, दबाव बनाकर या कानून का सहारा लेकर उन्हें रास्ते पर लाने की कोशिश करनी चाहिए, जिससे कि उन्हें सही रास्ते पर लाया जा सके।

दिनेश चन्द्र बधानी
ए.एफ.(एस.जी.)

''प्रतिभा अपनी राह स्वमं निर्धारित कर लेती है और अपना दीप स्वयं ले चलती है''

शान्ति को बाहर खोजना व्यर्थ है, क्योंकि वह तो आपके गले में पहना हुआ हार है।

आँधी क्या तूफान मिले

आँधी क्या तूफान मिले, चाहे जितने व्यवधान मिले।
बढ़ना ही अपना काम है, बढ़ना ही अपना काम है।

हम नई चेतना की धारा, हम अधियारें में उजियारा।
हम उस बयार के झोंके है, जो हर ले जग का दुख सारा।
चलना है शूल मिलें तो क्या, पथ में अंगार जलें तो क्या?
जीवन में कहॉ विराम है, बढ़ना ही अपना काम है।

हम अनुगामी उन पाँवो के, आदर्श लिए जो बढ़े चले,
बाधाएँ जिन्हें डिगा न सकी, जो संघर्षो में अड़े रहे,
सिर पर मंडराता काल रहें, करवट लेता भूचाल रहे,
पर अमिट हमारा नाम है, बढ़ना ही अपना काम है।

वह देखो पास खड़ी मंजिल, इंगित से हमें बुलाती है,
साहस करने वालों के, माथे पर तिलक लगाती है।
साधना न व्यर्थ कभी जाती, चलकर ही मंजिल मिल पाती।
फिर क्या बदली क्या घाम है, बढ़ना ही अपना काम है।

आँधी क्या तूफान मिले, चाहे जितने व्यवधान मिले।
बढ़ना ही अपना काम है, बढ़ना ही अपना काम है।

माया कुमारी
पत्नी सुनील कुमार
वरि. प्रबन्धक (वित्त)

कर्म वह आईना है जो हमारा स्वरूप हमें कर्म का एहसानमन्द होना चाहिए'

भारत में नारी का सम्मान

जिस देश में भगवान राम, गौतम बुद्ध महावीर स्वामी, स्वामी विवेकानन्द, रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती, दुर्गाभवानी जैसी महान हस्तियों ने जन्म लिया है, वहां नारी का सम्मान सर्वोपरि है। जहां नारी का सम्मान होता है वहॉ देवता भी प्रसन्न रहते है।

यत्र दारेषु पूजयन्ते, तत्र रमन्ते देवता। नारी का सम्मान भारतीय संस्कृति रही है।

वेदों में नदियों को माता पौधों, वनस्पतियों को देवताओं की संज्ञा दी गयी है। भारतीय संस्कृति में माना गया है कि–कुपुत्रों जायेत क्वचिद कुमात न भवति। अर्थात पुत्र तो कुपुत्र हो सकता है परन्तु माता कुमाता नही हो सकती। यह सूत्र दर्शाता है कि भारतीय समाजमें यह शक्ति है कि वह समस्याओं के साथ समाधान प्रस्तुत करती है।

मार्कण्डेय ऋषि ने दुर्गा सप्तशती में लिखा है ''या देवी सर्वभूतेषू मातृरूपेण संस्थिता। नमस्तै नमस्तयै नमो नमः

जिस देश में ज्ञान की देवी मां सरस्वती, अर्थ की देवी मां लक्ष्मी एवं शक्ति की देवी मां भवानी दुर्गा हो उस देश में नारी समस्याओं से पीड़ित हो, चिन्ता का विषय है। कुन्ती, गंधारी, द्रौपदी, विद्योत्मा, अपाला, तिलोत्मा एवं अहिल्या जैसी विद्धान एवं शक्तिशाली नारियों के देश में नारियों पर अपराध हो, यह क्षम्य नही है। नारियों पर अपराध चिन्ता का विषय है और नारी की सुरक्षा पर एक गम्भीर प्रश्न है।

इक्कीसवीं शताब्दी में नारियां सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ रही है, फिर चाहे वह सेना, पुलिस या न्यायपालिका का क्षेत्र हो। यदि राजनीति क्षेत्र के चर्चा की जाए तो नारियां बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रही है और अपना कार्य प्रतिवद्धता एवं समर्पण से कर रही है, परन्तु पिछले कुछ समय से नारियों, बालिकाओं के साथ हो रही हत्या बलात्कार एवं छेड़ छाड़ की घटनाएं अधिक चर्चाओं एवं बहस में आ रही है। इस तरह की घटनाएं समाज को अपने अन्दर आत्मचिन्तन एवं आत्मविश्लेषण का मौका देती है। जिस पर पुरूषों एवं महिलाओं दोनो को ही विचार करने की आवश्यकता है।

भारत की युवा पीढ़ी एवं युवाओं का पाश्चात्य जीवन की ओर बढ़ रहा आकर्षण बालक एवं बालिकाओं दोनों के विकास में बाधक हो रहा है और अनेक समस्याओं को जन्म दे रहा है। इसका समाधान भारतीय महिलाओं एवं पुरूषों को भारतीय संस्कृति की शिक्षा एवं भारतीय परम्पराओं से जोड़कर लिया जा सकता है। हमें अपने बच्चों और युवा पीढ़ी को चाहे वह बालक हो या बालिका भारत के आदर्श पुरूषों एवं नारियों की ओर उन्मुख करना होगा।

स्वामी विवेकानन्द जी ने भारतीय युवाओं एवं युवतियों को मंत्र दिया था ''उतिष्ठत जाग्रत, प्राप्य बरान्नि बोधत'' अर्थात उठो जागो एवं लक्ष्य प्राप्ति तक मत रूको मत। यदि भारत की युवा पीढ़ी स्वामी विवेकानन्द जी के मंत्र को अपनाएं तो भारतीय समाज एवं नारियां पूरे विश्व में अपनी धाक जमा सकेंगें। भारतीय नारियां आज के अपनी पढ़ाई एवं नौकरी के कारण मां एवं पिता से दूर रहकर जीवन यापन कर रही है। बड़े–बड़े महानगरों की संस्कृति में रहकर उन्हें अपनी जीवन शैली में बदलाव करना पड़ रहा है ऐसे में महिलाओं आत्म विश्वास के साथ साथ अपनी सुरक्षा के प्रति भी चिन्ता रखनी चाहिए, क्योंकि वहॉ पर माता पिता परिवार कुछ देख नही रहा है। स्वयं के प्रति जिम्मेवार बनना पड़ेगा।

नीलम वर्मा
पत्नी श्री सुनील कुमार वर्मा
प्रबन्धक (आई.टी)

मनुष्य के भीतर जो कुछ सर्वश्रेष्ठ है, उसका विकास प्रंशसा एवं प्रोत्साहन के द्वारा ही किया जा सकता है।

साड़ी परिधान

वैदिक काल से साड़ी स्त्री का श्रृगांर है,
मर्यादा है, परम्परा है, संस्कार है,
घूँघट और आंचल में आन, बान और सम्मान है,
साड़ी ही है जो, हमारी संस्कृति की पहचान है।

बचपन में बेटी मां की साड़ी पहन कर इतराती है।
आईने में देख अपने मां का रूप पाती है।
यही बेटी जब दसवीं क्लास की फेयरवेल में साड़ी पहनकर जाती है।
तब पिता की नजरों में रातो रात बड़ी हो जाती है।

हर प्रांत प्रदेश में साड़ी तेरे रूप अनेक,
हर रंग, हर ढंग, एक से बढ़कर एक।
कही छः गज की और कहीं नौ गज की शान दिखाएं।
पारम्परिक हो या तड़क भड़क, सब रूप में भाए।

पूजा, उत्सव, मुण्डन छेदन या हो बेटी की शादी,
घर का ऑगन, मेले ठेले में सबको भाती ।
चाहे पहने बहू या बेटी चाहे पहने दादी।
विदेशों में भी यह भारतीय नारी शान है।

खादी की सूती, बनारसी रेशम, या हो कांचीवरम
पटोला, बंधेज, पैथानी, बालूचरि या कांथा जैसी नरम।
तन को ढकना, गरिमा बढ़ाना इसका पहला है करम,
द्रोपदी की लाज बचाकर, पूरा किया धरम।
लाज बचाना, मान बढ़ाना यही तेरा काम है।

सूट, घाघरा लहंगा, यू तो है उसकी सहेलियां,
नये रूप, नये स्वरूप में नित करती है अठखेलियां।
हर नारी के दिल की तू अरमान है।
साड़ी ही है जो हमारी संस्कृति की पहचान है।

———————

प्रज्ञा त्रिवेदी
प्रबन्धन (प्रशिक्षु)

देश हमें देता है सब कुछ, हम भी कुछ देना सीखें।

वृक्ष

वृक्ष धरा के भूषण है,
करते दूर प्रदूषण है ।
हम सबको भातें हैं,
वृक्ष हरियाली लातें हैं ।

वृक्ष धूप में तपकर भी,
हमें छाया देते हैं ।
औषधि प्राणवायु और भोजन,
यही हमें देते हैं ।

वृक्ष धरा के भूषण है,
करते दूर प्रदूषण है ।
वृक्षों ने दिया बलिदान,
लेकिन हमने किया उसका कटान ।

हरे भरे यह पेड़ रहे,
जीवन में नौ रंग भरे ।
पेड़ों की शोभा है न्यारी,
फूल खिलें हैं क्यारी-क्यारी ।

वृक्षों से जब हमें मिला है जीवन,
तो क्यों न करें वृक्षारोपण ।
हरे भरे वृक्ष लगायेंगे
वसुधा पर हरयाली लायेंगे ।

हरियाली में मंगल है,
हरियाली में जीवन है ।
धरती माँ की यही पुकार,
वृक्ष लगाकर करो श्रंगार ।

शाम्भवी वर्मा
पुत्री सुनील कुमार वर्मा

परीक्षा

थी परीक्षा जिस दिन,
चिन्ता से हृदय धड़कता था।
थे अपशकुन घर से चलते ही
बांया नयन फड़कता था।
साल भर खेले थे खेल,
नही पढ़ाई हो पाई थी।
जब मिला परीक्षा का टाइम टेबिल,
रटने पर जोर लगाई थी।

सबसे पहले थी गणित की परीक्षा,
टू–टू का स्क्वायर रटना किया प्रारम्भ,
थ्री–थ्री का स्क्वायर रटना छूट गया।
हो गया मन विचलित जो भी था याद,
पेपर सामने आया जब, वह भी गया भूल।
छा गया अंधेरा दो–दो चार करना भी गया भूल।

अब कल परीक्षा होगी विज्ञान की,
डर से हाथ पैर फूल जाते इस नाम से।
सुनकर इनका नाम विज्ञान,
दिन में दिखाई देते तारे और चन्द्रयान।
था प्रश्न प्रकाश की गति बतलाओ,
मैने चन्द्रयान–3 पर लिख मारा अपना ज्ञान।

फिर आई परीक्षा इतिहास की बारी,
जिसे याद करना पड़ता है सबसे भारी,
कौन था अकबर का पापा, औंरगजेब का डैडी।
कौन थी रजिया बेगम, कौन था दिल्ली का सुल्तान,
परीक्षा के वक्त कुछ याद नही रहता,
मन–मस्तिक में नाच रही थी पिक्चर पठान।

संस्कृत में रूप रटना पड़ता है बड़ा कठिन है काम,
हम आज तक नही बोल पाएं सस्कृत की जबान।
न लिख पाते है, बोलने में न आती संस्कृत भाषा,
लेकिन अच्छे नम्बर से पास होने की है अभिलाषा।
मौज मस्ती खा गई पढ़ाई।
परीक्षा के वक्त आ रही रूलाई।

फिर भी हम हिम्मत नही हारेंगें,
पढ़ने में हम इतने भी कमजोर नही,
विश्वास भरा है मन में, अच्छे अंक ले आएंगे।
किसी से कम नही, कक्षा में प्रथम आ दिखलाएंगें
पापा–मम्मी के सपनों में अपना विश्वास जतायेंगें।

जैनब़ अयाज़
पुत्री–अयाज़ उद्दीन

कर से आयकर तक

आयकर का अर्थ है, आय पर लगने वाला कर। अर्थात सरकार के द्वारा देश के नागरिकों की आमदनी पर लगाये जाने वाले कर को आयकर कहा जाता है। क्या आयकर इस युग का ''कर'' है? तो इसका सीधा सा जवाब है–नही। आयकर का इतिहास बहुत ही पुराना है। पुराने समय में भी राजाओं–महाराजाओं के द्वारा कर लगाया जाता था।

भारत में आयकर की शुरूआत : 1857 अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ पहले स्वतंत्रता संग्राम की शुरूआत जिसने देश में स्वतन्त्रता की अलख जगा दी। जिसे ''सिपाही विद्रोह'' कहकर अंग्रेजों ने आन्दोलन को दबाने की कोशिश की। यह भारत स्वतन्त्रता संग्राम का शंखनाद था। इस विद्रोह के कारण अंग्रेजी हुकूमत को बहुत नुकसान हुआ और इसी नुकसान से उबरने के लिए आयकर लगाया गया।

हमें आयकर क्यों देना चाहिए? : हम अपने घरों का उदाहरण लेते हैं। कल्पना कीजिए, अगर हमारें घरों में आमदनी का कोई साधन न हो, तब ऐसी स्थिति में हम अपने जरूरत के सामान कैसे प्राप्त करेंगे? हमारे लिए खाने को कुछ नही होगा, पहनने के लिए कपड़ा कहाँ से आयेगा? अर्थात एक सुख–सुविधा पूर्ण जीवन व्यतीत करना कठिन हो जायेगा। ठीक इसी प्रकार जिस तरह घर को चलाने के लिए आमदनी बहुत ही आवश्यक है उसी तरह देश चलाने के लिए कर (आयकर) जरूरी है।

सरकार को देश में शिक्षा व्यवस्था, अस्पतालों का निर्माण, गरीब कल्याण और ऐसे ना जाने कितने ही प्रकार के विकास कार्यो के लिए फण्ड की जरूरत होती है, जिसके लिए सरकार द्वारा कर लगाया जाना अपरिहार्य हो जाता है। जिस प्रकार बिना आमदनी के एक सुख–सुविधायुक्त जीवन की कल्पना नही की जा सकती, ठीक उसी प्रकार बिना फण्ड के एक विकसित देश की कल्पना करना कठिन है।

भारत में कितने लोग आयकर देते हैं ?

वित्तीय वर्ष 2022–2023 शुद्ध आयकर से प्राप्ति रू–16.61 अरब है जो कि पिछले वर्ष 2021–2022 की तुलना में 17.63 प्रतिशत अधिक है। अगर हम बात करें कि भारत की कुल जनसंख्या का कितने प्रतिशत लोग कर देते है तो यह संख्या बहुत ही कम है मतलब 6.25 प्रतिशत लोग ही कर देते है।

घर चलाने के लिए जरूरी है इनकम।
देश चलाने के लिए जरूरी है टैक्स।
जितने अधिक है शौक, उतनी हो इनकम।
तो डरते क्यों हो तुम देने से टैक्स।
कैसे होगे पूरे होगें शौक,
जब कम होगी इनकम,
जब बढ़ती है शौक।
तब बढ़ानी होगी इनकम।
यही हाल है देश का
विकास के लिए देना होगा टैक्स।

रमा शंकर विश्वकर्मा
प्रबन्धक (प्रशिक्षु)

''जिस मनुष्य के हृदय में शीतलता निवास करती है। संसार भर में कोई मनुष्य उसकी बराबरी नहीं कर सकता''

हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ की गतिविधियां

राजभाषा अनुपालन में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ को तृतीय पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय–1), लखनऊ की 89वीं अर्ध–वार्षिक बैठक दिनांक 31.01.2023 को कार्यालय प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त (रा.भा. अनुभाग), प्रत्यक्ष कर भवन में आयोजित हुई। इस अवसर पर हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय–1), लखनऊ द्वारा राजभाषा अनुपालन में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु तृतीय पुरस्कार शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार दिनांक 31.01.2023 को नराकास अधिकारियों के कर कमलों से श्री आर. के. श्रीवास्तव, संयुक्त महाप्रबन्धक (परि.), श्री अयाज़ उद्दीन, हिन्दी नोडल अधिकारी व श्री कांती बल्लभ, हिन्दी नोडल सहायक ने प्राप्त किया।

डा. रवीन्द्र कुमार रे (स्वतन्त्र निदेशक), श्री एम. नागराज (निदेशक–कारपोरेट प्लानिंग), श्री डी. गुहन (निदेशक–वित्त), श्री हरीश शर्मा (कंपनी सचिव), डॉ. आलोक कुमार जोशी (कार्यकारी निदेशक–राजभाषा) एवं श्री सुरेन्द्र कुमार (महाप्रबन्धक–राजभाषा) द्वारा हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ की पत्रिका 'अवध भारती' के छठे अंक का ऑनलाइन विमोचन

09 फरवरी 2023 में निदेशक (कारपोरेट प्लानिंग) कार्यालय में पधारें जिनका दिव्य स्वागत किया गया।

कार्यालय में निरीक्षण के लिए नराकास के सचिव श्रीमान श्री नरेन्द्र पाण्डे और सहायक सुश्री मोनिका पधारे।

दिनांक 28 फरवरी 2023 को लखनऊ में राज्य स्तरीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें उ0प्र0 शासन के अधिकारियों, नराकास के अधिकारियों के साथ–साथ हडको के अधिकारियों ने भाग लिया।

श्री सुनील कुमार वरि. प्रबन्धक (वित्त) को 30 वर्षो की सेवा के पश्चात मुख्यालय द्वारा लॉंग सर्विस एवार्ड प्रदान किया गया।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ में हिन्दी पखवाड़ा, 2022 मनाया गया

मुख्यालय के परिपत्र दिनांक 01.09.2022 एवं 08.09.2022 के अनुसार दिनांक 15.09.2022 से 30.09.2022 तक हडको क्षेत्रीय कार्यालय,लखनऊ में हिन्दी पखवाडा, 2022 मनाया गया। इस दौरान निबन्ध एवं आशुभाषण प्रतियोगिताओ सहित विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया गया। जिसमें कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा विजयी प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय के अतिरिक्त सांत्वना पुरस्कार दिए गए।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ में दिनांक 15.09.2022 को हिन्दी पखवाड़ा, 2022 का शुभारम्भ निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) महोदय की अध्यक्षता में सूरत, गुजरात से ऑनलाइन लिंक के माध्यम से सभी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा भाग लेकर किया गया। जिसमें निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) ने दीप जलाकर संबोधन दिया गया। इसके पश्चात निदेशक (वित्त) ने मुख्यालय से संबोधन दिया गया। इसके बाद सयुंक्त महाप्रबन्धक (वित्त), हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ ने हिन्दी राजभाषा के प्रचार–प्रसार को बढाने का संकल्प लेने एवं अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करने हेतु आग्रह किया गया।

मुख्यालय में आयोजित हिन्दी कार्याशाला दिनांक 20.09.2022 में ऑनलाइन द्वारा सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया गया, हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ में आयोजित हिन्दी राजभाषा पखवाड़ा में दिनांक 20.09.2022 को हिन्दी निबन्ध, दिनांक 23.09.2022 को आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, मुख्यालय में आयोजित हिन्दी कार्याशाला दिनांक 28.09.2022 में ऑनलाइन द्वारा हिन्दी नोडल अधिकारी एवं हिन्दी नोडल सहायक ने भाग लिया एवं हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ में दिनांक 30.09.2022 को पखवाड़ा, 2022 के समापन व प्रतियोगिता में विजयी अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कार वितरण किया गया।

लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के छाया चित्र

छोटी–छोटी खुशियों को पूरे मन से और जोश से मनाएं।
इससे जीवन में उत्साह बना रहता है।

योग और विज्ञान

योग चित्तवृत्ति होने और देह और चित्त की खींचतान के बीच मावन को अनेक जन्मों तक भी आत्मदर्शन से वंचित रहने से बचाता है। योग का मूल सिद्धांत तथ आसनों के माध्यम से दैहिक तथा मनसिक पूर्णता को प्राप्त करना है। इसका आरम्भिक स्वरूप ग्रन्थों में, महाभारत, उपनिषदों, पतंजति के योग सूत्र तथा हठयोग प्रदीपिका में मिलता है।

योग एक पूर्ण विज्ञान है। इस पूर्ण जीवन शैली है, एक पूर्ण चिकित्सा पद्धति है एवं पूर्ण आध्यात्मिक विद्या है। स्वामी रामदेव जी के योग की लोकप्रियता का रहस्य इन्हीं सभी पद्धतियों पर आधारित होने के कारण यह लिंग, जाति, वर्ग सम्प्रदाय, क्षेत्र एवं भाषा भेद की संकीर्णताओं से कभी आवद्ध नही रहा। साधक, चिंतक, वैरागी अभ्यासी, ब्रह्मचारी, गृहस्थ कोई भी इसका सानिध्य प्राप्त लाभान्वित हो सकता है। योग व्यक्ति के निर्माण और उत्थान में ही नहीं बल्कि परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व के चहुमुखी विकास में भी उपयोगी सिद्ध हुआ है। योग मनुष्य को सकारात्मक चिंतन के प्रशस्त पथ पर लाने की एक अद्भुत विद्या है, जिसे करोड़ो वर्ष पूर्व भारत के ऋषियों—मुनियों ने अविष्कृत किया था। आज के युग में मनुष्य भाग दौड़ की जिन्दगी में भेग—विलास के पीछे अपना सब कुछ खोता जा रहा है, फिर भी उसे आत्मिक और मानसिक शान्ति नहीं मिल पा रही है। इसका कारण यह कि वह वैसे से सब कुछ हासिल करना चाहता है, इसी प्रक्रिया में अनेको रोगो से ग्रसित हो जाता है। बाबा रामदेव अक्सर कहते है कि योगासनों को आधुनिक जीवन में बस व्यायाम तक ही सीमित मत रखियें, बल्कि ध्यान का माध्यम भी

बनाइयें, क्योंकि व्यक्ति मन को एकाग्र कर के ध्यानावस्थित रूप में जीवात्मा परमात्मा से मिलने की आंकाक्षा करता है। योग कई प्रकार की शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियों को अपने दायरे में लेते है, जिसका उद्देश्य मनुष्य को अपने ही सच्चे रूप के बारे में ज्ञान कराना है, जिससे वह मानव जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सके। योग के प्रचार प्रसार में आज कई संस्थायें कार्य कर रही है। बाबा राम देव की पतंजति योग संस्थान, भारतीय योग संस्थान और श्री श्री रविशंकर की आर्ट आफ लिविंग संस्था। इसी आर्ट आफ लिंविग संस्था की प्रशिक्षक को लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय में बुलाया गया, उन्होने योग पर अपना व्याख्यान दिया और कर्मचारियों से योग भी करवाया।

9वें योग दिवस के कुछ आर्ट आफ लिविंग की प्रशिक्षक के साथ कुछ छाया चित्र

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ में दिनांक 24.04.2023 को चिकित्सा शिविर का आयोजन

आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार के पत्र दिनांक 07.03.2023 और हडको मुख्यालय के निर्देशानुसार, हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ द्वारा अपने कार्यालय में चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इस परिसर में अन्य कार्यालय स्थित है जिसमें हडको क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा अन्य कार्यालयों के कर्मचारियों को चिकित्सा शिविर में आने हेतु आमंत्रित किया गया था जिससे ज्यादा से ज्यादा अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा इसका लाभ उठाया जा सके। इसमें राष्ट्रीय आवास बैंक (NHB) एवं स्टेट बैक आफ इण्डिया (SBI) द्वारा भाग लिया गया। चिकित्सा शिवर में डा० अभिषेक कुमार, वरि० परामर्शदाता BAMS आयुर्वेद आचार्य को आमंत्रित किया गया। उनके द्वारा खाना-पान तथा शारीरिक गतिविधियां पर प्रस्तुति दी गई| चिकित्सा शिविर के दौरान चेकअप कैम्प भी लगाया गया। चेकअप कैम्प में उपस्थित डॉक्टर द्वारा नाड़ी परीक्षण किया गया तथा परामर्श भी प्रदान किया गया।

चिकित्सा शिविर में हडको एंव परिसर में स्थित राष्ट्रीय आवास बैंक NHB,लखनऊ एवं स्टेट बैक आफ इण्डिया SBI, पिकप शाखा के अधिकारियों एवं कर्मचारियां द्वारा भाग लिया गया।

कार्यालय द्वारा 53वां स्थापना दिवस मनाया गया। कुछ यादगार लम्हों के छाया चित्र कैमरें में कैद हो गये

लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के कर्मयोगियों द्वारा 77वाँ स्वतंत्रता दिवस हर्षो उल्लास के साथ मनाया गया। हर घर तिरंगा, घर घर तिरंगा अभियान में सभी ने भाग लिया और अपने–अपने घरों में तिरंगा फहराया।

देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें।
सूरज हमें रोशनी देता, हवा नया जीवन देती है।
भूख मिटाने को हम सब की, धरती पर होती खेती है।
औरों का हित हो जिसमें, ऐसा कुछ करना सीखे।

जय हिंद।

''प्रसन्नता वो पुरूस्कार है जो हमें हमारी समझ के अनुरूप सबसे सही जीवन जीने पर मिलती है''

हडको लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय

लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय में 14 जून 2023 को विश्व रक्तदान दिवस (World Blood Donor Day) मनाया गया। रक्तदान दिवस पर उपस्थिति सभी अधिकारीयों एवं कर्मचारियों द्वारा शपथ लिया गया एवं क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा रक्तदान के महत्व को बताया गया तथा यह भी समझाया कि रक्तदान करना समाज ही नहीं, सेहत के लिए भी फायदेमंद होता है।

श्रीमान रत्न प्रकाश, क्षेत्रीय प्रमुख हडको लखनऊ के दायित्व से कार्यमुक्त होकर मुख्यालय गये और श्रीमान आर. के. श्रीवास्तव द्वारा चार्ज ग्रहण किया गया। छाया चित्र :

05 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण किया गया। कुछ छाया चित्र

कार्यालय में हडको स्पोर्ट डे (खेल दिवस) मनाया गया, जिसमें परिवार के लोंगो ने भाग लिया। कुछ छाया चित्र।

क्षेत्रीय प्रमुख, श्री आर. के. श्रीवास्तव द्वारा बिज़नेस जनरेशन के सम्बन्ध में उत्तर प्रदेश शासन के अधिकारियों से शिष्टाचार भेंट की गयी।

श्री दुर्गा शंकर मिश्र, मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश सरकार

श्री रवि जैन, निदेशक आवास विभाग उत्तर प्रदेश

श्री मनोज कुमार सिंह, अपर मुख्य सचिव–औद्योगिक विकास आयुक्त

श्रीमान दीपक कुमार, अपर मुख्य सचिव–वित्त

श्री नील रतन, विशेष सचिव (वित्त)

श्री नितिन रमेश गोकर्ण, अपर मुख्य सचिव (आवास)

लोकहित प्रकटीकरण और मुखबिर संरक्षण संकल्प, 2004 (पिडपी)

पिडपी क्या है ?	• पिडपी भारत सरकार का एक संकल्प है। • इसके अंतर्गत दर्ज की गई सभी शिकायतों के शिकायतकर्ताओं की पहचान गोपनीय रखी जाती है।
पिडपी शिकायत कैसे की जाती है ?	• सचिव, केन्द्रीय सतर्कता आयोग को शिकायत भेजी जाए और लिफाफे पर 'पिडपी' लिखा होना चाहिए। • शिकायतकर्ता का नाम और पता लिफाफे पर नहीं लिखा होना चाहिए अपितु बंद लिफाफे के अंदर पत्र में होना चाहिए।
शिकायतकर्ता की पहचान गोपनीय रहे, ऐसा सुनिश्चित करने के लिए दिशानिर्देश	• जो शिकायतें व्यक्तिगत रूप से शिकायतकर्ता से संबंधित हैं या अन्य अधिकारियों को संबोधित हैं, उनमें पहचान प्रकट हो सकती है। • शिकायतें खुली स्थिति में या सार्वजनिक पोर्टल पर नहीं भेजी जानी चाहिए। • शिकायत में पहचान प्रकट करने वाले दस्तावेज़ संलग्न नहीं करने चाहिए अथवा उनका उल्लेख नहीं किया जाना चाहिए जैसे: आर.टी.आई के अंतर्गत प्राप्त दस्तावेज। • लिफाफे के अंदर पत्र पर नाम और पता पुष्टि के प्रयोजन से लिखा होना चाहिए। • जिन शिकायतों की पुष्टि प्राप्त नहीं होती है, उन्हें बंद कर दिया जाता है। • अनाम/छद्मनाम पत्रों पर विचार नहीं किया जाता है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2023

अधिक जानकारी के लिए
https://www.cvc.gov.in
को देख सकते हैं।

हडको
hudco

अवध भारती 2023-24
सप्तम अंक

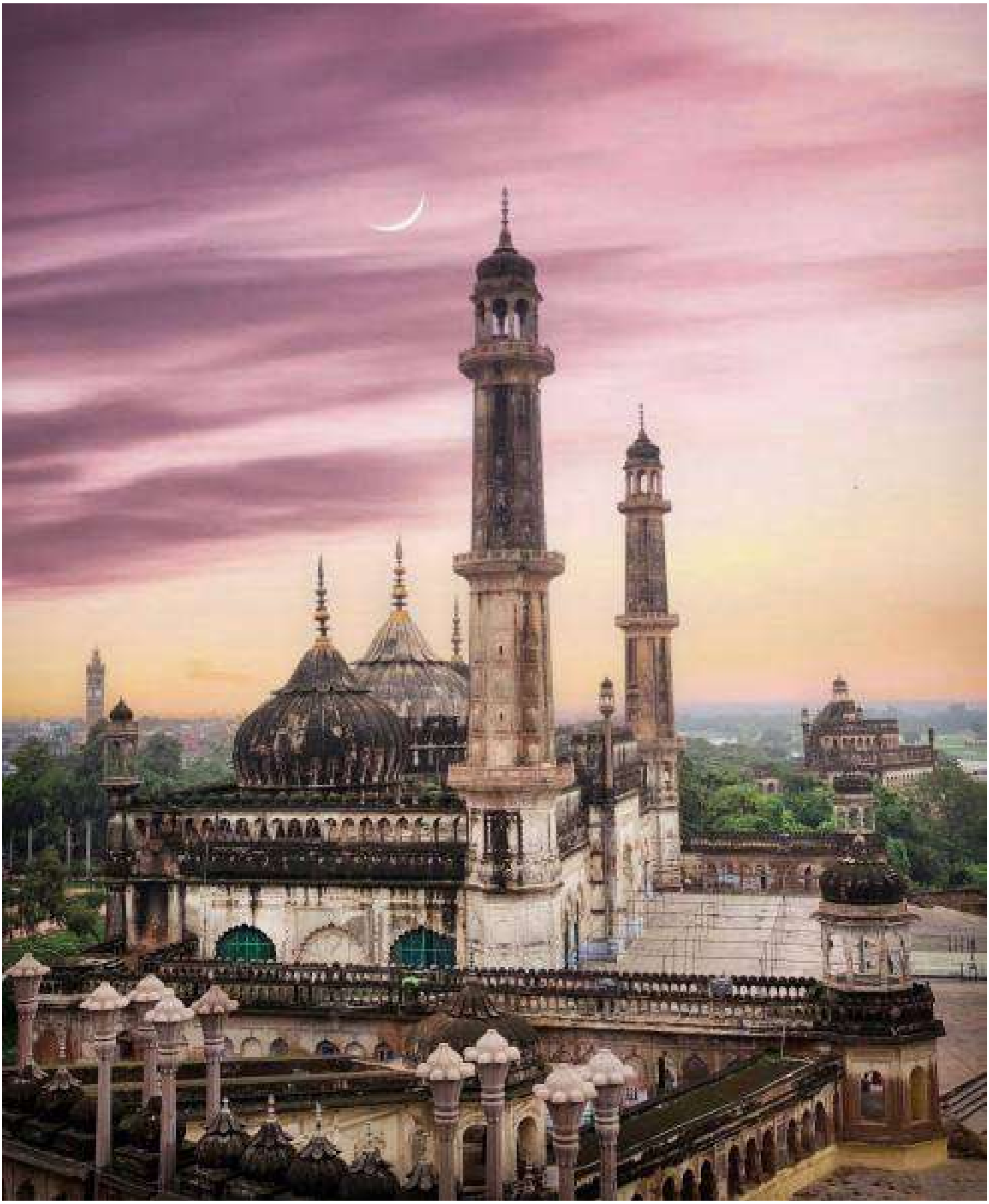

लखनऊ का दर्शनीय स्थल और ऐतिहासिक धरोहर इमामबाड़ा

हडको राष्ट्र सेवा में समर्पित

हडको
hudco

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कारपोरेशन